Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

जन-ज्ञान

(मासिक)

आर्य जनता का
प्रतिनिधि प्रकाशन

महर्षि-दयानन्द
श्रद्धांजलि
विशेषांक

वर्ष १ | १५ अगस्त, १९६८ | अंक ४

मूल्य एक रुपया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

टंकारा का वह मकान जहां बालक मूलशंकर का जन्म हुआ था

अजमेर का वह भवन जहां महर्षि दयानन्द ने दीप-मालिका के दिन अपने शरीर का त्याग किया था

CC-0. Vivek Aryavedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

महापुरुष की राह पर !

दयानन्द भारत के ही नहीं संसार के इतिहास में अपने ढंग के 'अकेले' महापुरुष थे। उनका संपूर्ण जीवन सत्य और मानवता की उदात्त भावनाओं का प्रसारक था।

महर्षि किसी देश-जाति-वर्ग विशेष का ही उद्धार न चाह मानव मात्र को मृत्यु मार्ग से हटा जीवन के, आनन्द और शांति के मार्ग पर चलाना चाहते थे। वे चाहते थे कि जन्म से मृत्यु पर्यंत धरती का कोई भी व्यक्ति रोए नहीं—सदा मुस्कराता रहे।

मत-वादों को वे मनुष्य-मनुष्य के बीच से समाप्त कर "यत्र विश्वं भवत्येक नीडं" सारे संसार को एक परिवार की तरह रहना सिखाना चाहते थे। उनके भाव, उनका लक्ष्य, उनके विचार, सभी मानव मात्र के प्रति छलकते प्रेम का उदाहरण हैं।

ऐसे अद्वितीय महापुरुष के प्रति विश्व के प्रसिद्ध पुरुषों ने जो श्रद्धांजलियां प्रस्तुत की हैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि के साथ हम 'जन-ज्ञान' के पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं। इस प्रयत्न में रायसाहिब चौधरी प्रतापसिंह जी ने जहां हमें उदारतापूर्वक प्रेरणा की, वहां २५०) की सहायता भी दी, हम उनके आभारी हैं।

महर्षि के प्रति इन श्रद्धाजलियों को पढ़कर यदि हम सच्चे मन से ऋषि का अधूरा कार्य पूरा करने का व्रत ले सकें तो सचमुच संसार एक दिन दयानन्द के चरणों में बैठकर मुग्ध कंठ से उनके गीत गाएगा।

अंक के आरम्भ में ऋषि का संक्षिप्त जीवन भी दे दिया है। पाठकगण ! महान् पुरुष के जीवन से कुछ सीखकर आइए हम उत्साह से उसकी ही राह पर चलें।

—भगवानदेव शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
१५९७ हरध्यानसिंह रोड
करोलबाग, नई दिल्ली-५

•

मु० प्रकाशक राकेश रानी द्वारा
रायजीना प्रेस दिल्ली में मुद्रित

भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार
के संरक्षण-निर्देशन में प्रकाशित

•

संपादक—भगवानदेव शर्मा
महर्षि दयानन्द योगाश्रम टंकारा (गुजरात)

वार्षिक मूल्य ६) • आजीवन सदस्य १००)

१५ अगस्त, १९६८

इस अंक के 'प्रकाशन' के लिए करनाल के प्रसिद्ध दानवीर रायसाहिव चौ० प्रतापसिंह जी ने अपने ट्रस्ट से २५०) की सहायता दी है। 'जन-ज्ञान' उनका हार्दिक आभारी है

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युग-पुरुष, महा-मानव, देव दयानन्द को कोटिशः प्रणाम !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

युगपुरुष ऋषि दयानन्द

आविर्भाव

१९वीं शताब्दी के उस अन्धकार युग में जब समस्त भारत देश निराशा के प्रवाह में, अपने महान् गौरव, इतिहास परम्परा और धर्म को विस्मृति के गहरे गर्त्त में डाल विनाश की ओर बहा जा रहा था, पराधीनता और अज्ञान का चक्र जब सभी कुछ समाप्त करने को तत्पर था, तब परमात्मा की अनुकम्पा से सन् १८२४ ई० (सम्वत् १८८१ वि०) में मौरवी (गुजरात) राज्य टंकारा नामक स्थान में, युग-प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ।

महर्षि दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पिताजी का नाम श्री कर्षनजी था। वे गुजरात प्रदेश के मौरवी राज्य के एक सम्पन्न और उच्चवंश के व्यक्ति थे। एक राज-कर्मचारी के रूप में राज्य में उनकी पर्याप्त प्रतिष्ठा थी। ऐसे कुल में धार्मिक संस्कारों के अनुसार बालक मूलशंकर के रूप में ऋषि दयानन्द का पालन-पोषण, सम्वर्द्धन एवं शिक्षण हुआ।

जिज्ञासु बालक

१४ वर्ष की आयु में उनके पिताजी ने शिवरात्रि के अवसर पर बालक मूलशंकर से शिवरात्रि का उपवास व्रत रखाया और शिव मंदिर में पूजार्थ रात्रि जागरण कराया। शिव के जिस महात्म्य का वर्णन पंडितों ने सुनाया था उसके सम्बन्ध में बालक मूलशंकर विचार करता रहा पर शिवमूर्ति पर चढ़े हुए चढ़ावे को जब चूहे ने आकर निर्भय एवं निर्द्वन्द्व होकर भक्षण करना आरम्भ किया आरम्भ किया तब तपस्वी बालक के हृदय में शंका उत्पन्न हुई कि जिस शिव को रुद्र एवं त्रिशूल-धारी की उपाधियों से विभूषित बताया गया है, वह अपनी एक क्षुद्र मूषक से रक्षा क्यों नहीं कर सकता ? इस शंका ने बालक के हृदय में "अथातो धर्म-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिज्ञासा" की उस जिज्ञासा को जन्म दिया जो भारत में धार्मिक क्रान्ति एवं राष्ट्रीय नवचेतना का कारण बनी।

महाभिनिष्क्रमण (गृह-त्याग)

धर्म-जिज्ञासु और अमरता की खोज करने वाले बालक को परिवार का मोह एवं भौतिक सुख-सम्पत्ति के लोभ अपनी शृंखलाओं में न बांध सके और आदित्य ब्रह्मचारी के रूप में सच्चे शिव की खोज के लिए वह बालक एक दिन अपने घर से निकल पड़ा। माता-पिता की आशाओं पर तुषारपात हो गया, वे अपने पुत्र को विवाह बंधन में बांधने का स्वप्न साकार न कर सके। इस प्रव्रज्या का मानव-इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता। गौतम बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण में कोई बाधा सम्मुख नहीं आयी; वे अपने सारथी को साथ लेकर राजमहल से निकल गये। लेकिन बालक मूल का संकल्प, संकल्प की पूर्ति के लिए प्रयाण और प्रवास की गोपनीयता के लिए निराहार वृक्षारोहण और जागरण ऐसी घटनाएं हैं कि जिनका उदाहरण नहीं मिलता और जो संकल्प सिद्धि के लिए दृढ़ निष्ठा की परिचायक थीं।

सत्य की खोज में

गृह-त्याग कर सत्यमार्ग के अन्वेषक पथिक मूलशंकर ने स्वामी पूर्णानन्दजी सरस्वती से संन्यास की दीक्षा लेकर दयानन्द सरस्वती नाम धारण किया। संन्यासी दयानन्द ने १५ वर्ष तक भारत का भ्रमण किया, विद्वानों, तपस्वियों और योगियों की खोज में खाक छानी, भारत के प्रत्येक तीर्थ में वह अपनी ज्ञान-पिपासा शान्ति के लिए भटकता रहा, अनेक कष्ट सहन, भूख, अपमान और संकटों का सामना करने पर भी दयानन्द को ज्ञानालोक के दर्शन न हो सके। दयानन्द ने अपने चारों ओर अज्ञान, अन्ध विश्वास, गुरुडम, पाखंड और सहस्रों, लक्षों मूर्तियां देखीं जिनसे उसे घृणा हो गई। सत्य की खोज में जिज्ञासु दयानन्द हिमालय की कन्दराओं और चोटियों पर भटकता रहा और हिम संकट में फंस कर शरीर त्याग करने का भी उसके मन में विचार आया, परन्तु फिर यह निश्चय करके कि 'यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने और संसार का उपकार करने के बाद ही शरीर छोड़ना चाहिए' आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द ने ज्ञान की खोज में फिर यात्रा आरम्भ कर दी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरु-शिष्य के रूप में दो महान् आत्माओं का मिलन

सन् १८५८ में मथुरा में दयानन्द को एक वृद्ध संन्यासी के दर्शन प्राप्त हुए। वे संन्यासी अन्धविश्वासों और मानवीय दुर्बलताओं का खंडन करने में दयानन्द से भी उग्र थे। दयानन्द ने प्रज्ञा-चक्षु उद्भट विद्वान् विरजानन्द दण्डी में अपने अभीष्ट की झांकी पायी और गुरु चरणों में अपना मन समर्पण कर दिया। दण्डीजी ने भी अपनी ज्ञान-ज्योति से दयानन्द की तर्क ज्योति को प्रज्वलित किया। यह वह समय था जब भारत में विदेशी दासता से उन्मुक्त होने के लिए १८५७ में विद्रोह की घटनाएं घटित हो चुकी थीं।

अद्वितीय गुरु-दक्षिणा

ढाई वर्ष तक गुरु विरजानन्द की शिष्य रूप में सेवा कर शिष्य दयानन्द ने गुरु से विदा लेनी चाही। गुरु ने शिष्य की लोगों की भेंट का आदर करते हुए मानव जाति के हितार्थ दयानन्द का जीवन भेंट में मांग लिया। गुरु दक्षिणा में भौतिक वस्तुओं का दान सम्भव और सुलभ है, पर जीवन-दान की यह घटना दयानन्द के गृह-त्याग की भांति अपूर्व है।

सत्य का संदेशवाहक

गुरु से विदा लेते ही दयानन्द ने अपनी प्रचार-यात्रा आरम्भ कर दी, अपने श्रोताओं के सम्मुख स्वर्ग के मोहक एवं लुभावने दृश्य उपस्थित करने के स्थान पर वीर दयानन्द ने एकमात्र सत्य के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के वेद-विरुद्ध विचारों को वाणी और लेखनी के समराङ्गण में चुनौती दी।

निडर संन्यासी (पाखण्ड-खण्डिनी पताका की स्थापना)

हरिद्वार कुम्भ में "पाखण्ड-पाण्डिनी पताका" लेकर लंगोट-बन्द संन्यासी दयानन्द ने सिंह के समान गरज-गरजकर साधुओं, महन्तों और पण्डों की करतूतें दिखलाकर हर की पैड़ी में गंगा-माहात्म्य आदि पाखण्डों की धज्जियां उड़ाईं।

पाखण्ड दुर्ग पर प्रहार

दयानन्द के प्रचार-प्रहार ने पाखण्ड के दुर्गम दुर्ग को हिला दिया। अल्प काल में ही उत्तर भारत में कायापलट आरम्भ हो गई। इस सफलता से विरोधी घबरा उठे, आरम्भ के चार-पांच वर्षों में ही विष द्वारा उनके प्राण लेने के प्रयत्न किये जाने लगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द पर विजय प्राप्त करना असम्भव था क्योंकि वे वैदिक वाङ्मय और संस्कृति के अनुपम भण्डार थे और उनके ज्ञान की बराबरी कोई न कर पाता था। उनके शब्दों की धधकती हुई आग से उनके विरोधियों का विरोध भस्मसात् हो जाता था। दयानन्द का आगमन उस समय रूढ़िवाद एवं अन्धविश्वास की गन्दगी के लिए जल की प्रबल बाढ़ के समान सिद्ध हुआ। शंकराचार्य के बाद दयानन्द जैसा वेदवित् भारत-भूमि में उत्पन्न नहीं हुआ।

काशी-शास्त्रार्थ विजय

१८६९ में दयानन्द की अजेयता से परास्त पौराणिक पंडितों ने दयानन्द को अपने दुर्ग बनारस में निमंत्रित किया। वहां भी वे निर्भयता-पूर्वक गए और षड्यन्त्र को विफल करते हुए विजयी घोषित हुए और सारे भारत में दयानन्द दिग्विजय का शंखनाद गूंज उठा।

आर्य समाज की स्थापना

पौराणिक पोपडम के साथ-साथ मुस्लिम धर्मान्धता और ईसाइयत के मोहक आकर्षण के विरुद्ध भी दयानन्द ने अपनी शक्ति का उपयोग किया। ब्रह्मसमाज एवं थियोसाफीकल सोसायटी के भ्रमजाल को भी उन्होंने काटकर निर्मल वेद-ज्ञान के प्रसार एवं प्रचारार्थ १८७५ में "आर्य समाज" की स्थापना की और संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य घोषित किया। इस प्रकार विश्व-बन्धुत्व के भारतीय आदर्श को उन्होंने साकार रूप देने का यत्न किया।

अज्ञानान्धकार में निमग्न धार्मिक जीवन, रूढ़िग्रस्त समाज और विदेशी दासता की शृंखलाओं में आबद्ध भारत राष्ट्र के समुद्धार का दायित्व आर्य समाज के सदस्यों को सौंपते हुए महर्षि दयानन्द ने देश का तूफानी दौरा आरम्भ किया। बम्बई, लाहौर, कलकत्ता, पटना, राज-स्थान, जबलपुर सभी क्षेत्रों में उनके मिशन का कार्य आरम्भ हो गया। राजस्थान के क्षत्रिय वंशधरों को स्वाधीनता का मन्त्र पढ़ाकर वे राज-नीतिक संघर्ष की भूमिका तैयार करते रहे। स्त्री-शिक्षा, अस्पृश्यता निवारण, पर्दा-प्रथा निवारण, बाल-वृद्ध विवाह विरोध, ब्रह्मचर्य पालन का प्रबल समर्थन, स्वदेशी, स्वभाषा (संस्कृत-हिन्दी), स्वसभ्यता भारतीय वाङ्मय आदि की महत्ता की स्थापना, शिक्षा-प्रसार, जन्मना वर्ण-व्यवस्था के स्थान पर कर्मणा वर्ण-व्यवस्था का समर्थन, ब्रह्म-मायावाद के दार्शनिक दृष्टिकोण के स्थान पर कर्म-व्यवस्था से युक्त त्रित्ववाद (ईश्वर, जीव, प्रकृति) के दार्शनिक विचार की पुनः स्थापना, मूर्ति-पूजा के अभिशाप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से मुक्त कर निराकार ईश्वर की उपासना का व्यापक प्रचार आदि उनके रचनात्मक कार्य थे।

साहित्य-निर्माण एवं मार्ग-दर्शन

अपने मन्तव्यों के स्पष्टीकरण के लिए महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेद-भाष्य आदि साहित्य का निर्माण किया और इस कार्य को जारी रखने के लिए भारत के गण्य-मान्य व्यक्तियों के सहयोग से "परोपकारिणी सभा" की स्थापना की।

भारत में गो-हत्या को बन्द कराने के लिए महर्षि ने एक हस्ताक्षर-आन्दोलन भी आरम्भ किया और मेमोरैण्डम लेकर स्वयं अंग्रेज वायसराय से मिले।

निर्भीकता और अडिग ईश्वरविश्वास के साथ वे संसार की भलाई के महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए तड़फते फिरते रहे। सत्य की खोज के लिए वे सबका सहयोग प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहे और एक बुद्धि-वादी के रूप में अपने शिष्यों को भी सत्य की खोज जारी रखने का उन्होंने आदेश दिया। वे सम्प्रदायवाद के दुर्गम दुर्ग को गिराने में जीवन-भर जुटे रहे। उन्होंने स्वयं कोई पन्थ या सम्प्रदाय न चलाकर सर्व-साधारण को वेद-ज्ञान के निर्मल निर्झर की अमृत जलधारा का पान कराया और सर्वसाधारण को वहां तक पहुंचने में 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम्" के रूप में जो बाधाएं थीं, उन्हें दूर किया।

निर्वाण

सन् १८८३ ई० में महर्षि अपनी प्रचार यात्रा पर जोधपुर गए। महाराज को धर्मोपदेश देते रहे, पर महाराज की चरित्रहीनता पर वे दुःखी हुए और उन्हें धिक्कारा। वेश्या नन्हींजान ने अपने मार्ग की बाधा समझ-कर महर्षि को दूध में कांच पिसवाकर पिलवा दिया। जीवन में इससे पूर्व तेरह बार महर्षि को विष दिया जा चुका था, पर इस बार का विष घातक सिद्ध हुआ। पर्याप्त चिकित्सा एवं उपचार के बाद भी वह अमूल्य जीवन बच न सका। अजमेर में मंगलवार, कार्तिकी अमावस्या (दीपावली), सन् १८८३ ई० की सायंकाल ६ बजे दुखिया भारत-माता का सच्चा सपूत, मनुष्यमात्र का हितचिन्तक, आदित्य ब्रह्मचारी, वेदों का अद्वितीय विद्वान् दयानन्द इस असार संसार को त्यागकर "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" इस ईश्वर-भक्ति और श्रद्धा के साथ इच्छा-मृत्यु को वरण करता हुआ निर्वाण को प्राप्त हो गया। एक पार्थिव-ज्योति बुझ गई पर उसके द्वारा ज्योतित ज्ञान-ज्योति मानवता को सदैव प्रकाश देती रहेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशी विद्वानों नेताओं सुधारकों की दृष्टि में

●

युग प्रवर्तक दयानन्द

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यदि हम महर्षि का सच्चा स्वरूप संसार को बता सकें तो धरती का प्रत्येक व्यक्ति महर्षि के चरणों में अपनी मूक श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके मार्ग का पथिक बन सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्व हितैषी

यूरोप के प्रसिद्ध विद्वान्, संस्कृत साहित्य के प्रेमी कई ग्रन्थों के रचयिता श्री प्रो० एफ० मैक्समूलर —

"आर्यसमाज के आन्दोलन के प्रति मेरी पूर्ण सहानुभूति है। स्वामी दयानन्द ने विश्व-हित के लिये कार्य किया है। आर्यसमाज के अनुयाइयों को शान्त नहीं बैठना चाहिए। किन्तु स्वामी जी के उपदेशों को सफल बनाने के लिये प्रतिदिन अग्रसर रहना चाहिए। यदि मुझे आर्यसमाज की सेवाओं का सौभाग्य प्राप्त होगा तो मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझूंगा।

.....स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया और जहाँ तक समाज सुधार का सम्बन्ध है, वह बड़े उदार-हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदों पर आधारित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदों पर बड़े-बड़े भाष्य किये, जिस से मालूम होता है कि वे पूर्ण अभिज्ञ थे। उन का स्वाध्याय बड़ा व्यापक था।

जन-जागृति के जन्मदाता

फ्रेंच के प्रसिद्ध तत्ववेत्ता एवं महान् लेखक, सन्त श्री रोमारोला—

"ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह-पराक्रम फूंक दिया है।"

ऋषि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष सिंह उन में से एक था जिन्हें यूरोप प्रायः उस समय भुला देता है, जब कि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है। किन्तु एक दिन यूरोप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को अपनी भूल मान कर उसे याद करने के लिये बाधित होना पड़ेगा, क्योंकि उस के अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था। दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन किया और उससे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जन जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सब से अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्र-संगठन के अत्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से थे।

निराकार एकेश्वरवाद के प्रचारक

महर्षि समकालीन, थियोसीफीकलसोसाइटी की संस्थापिका सुधारवादी, मैडम ब्लावाटस्की।

"मूर्ति पूजा, बाल विवाह और मिथ्या विश्वासों के विरुद्ध गर्जन करते हुए स्वामी दयानन्द ने कोने-कोने का परिभ्रमण किया। भारत के पतन और उसकी राजनैतिक दासता के लिये वह ब्राह्मणों को उत्तर-दायी ठहराते थे। उनकी दृष्टि में भारत के दुर्गुणों का मुख्य कारण वेदों का अशुद्ध भाष्य है। स्वामी जी का संस्कृत का ज्ञान अगाध था, जिसके बल पर वह वेदों की एकेश्वरवाद विषयक शंकाओं का निवारण करके न केवल जनसामान्य का ही अपितु विद्वानों का भी हित करते थे। यह निश्चत है कि 'शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ गम्भीर अध्यात्मवेत्ता, आश्चर्यजनक वक्ता और बुराई का निर्भीक प्रहारक भारत को प्राप्त नहीं हुआ।"

स्वामीजी जहाँ जाते जन-समूह उनके चरणों की धूल में लोटने को उद्यत रहता, परन्तु वह उन्हें किसी नए धर्म का उपदेश नहीं देते और न नए-नए मिथ्या विश्वासों की ही सृजना करते हैं। वह उन्हें विस्मृत संस्कृत अध्ययन को अपनाने और अपने पूर्व पुरुषों के सिद्धान्तों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की पौराणिक पण्डितों के द्वारा प्रसारित मिथ्या विश्वासों के साथ तुलना करके प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रतिपादित एकेश्वरवाद की ओर आने की प्रेरणा किया करते थे।

महान् प्रकाश स्तम्भ

अमेरिका के परोक्षदर्शी विद्वान्, महानता के पुजारी श्री ऐण्ड्रयूज जैक्सन ने महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज को निम्न शब्दों में भव्य अंजलि दी है—

"मुझे एक आग दिखाई पड़ती है जो सर्वत्र फैली हुई है अर्थात् असीम प्रेम की आग जो कि द्वेष को जलाने वाली है और प्रत्येक वस्तु को जलाकर शुद्ध कर रही है। अमेरिका के शीतल मैदानों, अफ्रीका के विस्तृत देशों, एशिया के प्राचीन पर्वतों और युरोप के विशाल राज्यों पर मुझे इन सब को जलाने वाली और इकट्ठा करने वाली आग की ज्वालाएं दिखाई देती हैं। इसकी चर्चा निम्नस्थ देशों से उठी है। अपने सुख और उन्नति के लिए इसे मनुष्य ने स्वयं प्रज्वलित किया है।

हिन्दु और मुसलमान इस प्रचण्ड अग्नि को बुझाने के लिए चारों ओर वेग से दौड़े परन्तु यह आग ऐसे वेग से बढ़ती गई कि जिसका इसके प्रकाशक स्वामी दयानन्द को ध्यान भी न था और ईसाइयों ने भी जिनके मत की आग और पवित्र दीपक पहले-पहल पूर्व में ही प्रकाशित हुए थे, एशिया के इस नए प्रकाश के बुझाने में हिन्दुओं और मुसलमानों का साथ दिया, परन्तु यह ईश्वरीय आगे और भी भड़क उठी और सर्वत्र फैल गई।

सम्पूर्ण दोषों का संघट्ट नित्य की शुद्ध करने वाली भट्टी में जल कर भस्म हो जायगा, यहाँ तक कि रोग के स्थान में आरोग्य, झूठे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्वासों की जगह तर्क, पाप के स्थान में पुण्य, अविद्या की जगह विज्ञान, द्वेष की जगह मित्रता, वैर की जगह समता, नरक के स्थान में स्वर्ग, दुःख के स्थान में सुख, भूत प्रेतों के स्थान में परमेश्वर और प्रकृति का राज्य हो जायगा। मैं इस अग्नि को मांगलिक समझता हूँ। जब यह अग्नि सुन्दर पृथ्वी को नवजीवन प्रदान करेगी तो सार्वजनिक सुख, अभ्युदय और आनन्द का युग आरम्भ होगा।

यह आग एक भट्ठी में थी जिसे आर्यसमाज कहते हैं। यह आग भारतवर्ष के परम योगी दयानन्द के हृदय में प्रज्वलित हुई थी।"

प्रचण्ड ब्रह्मबल की मूर्ति

मानवता के पुजारी, महान् तत्वज्ञ श्री दीनबन्धु एन्ड्रूज ने महर्षिजी को विलक्षण प्रतिभाशाली बताते हुए कहा –

"मैंने महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व पर जितना अधिक विचार किया तथा अध्ययन किया, उतना ही मुझे अधिक खात्री होती गई कि उनके महान् प्रभाव का रहस्य उनकी कार्य पद्धति में देखने को मिलता है। जिससे वे अपनी मातृभूमि की आत्मा अथवा प्राचीन भारत के आदर्श को संगठित करके उसका प्रचार चाहते थे। उस समय लोग हताश होकर अपनी प्राचीन भक्ति भावना तथा प्राचीन मर्यादा को तिलाँजलि दे रहे थे। देश में अनेक मनुष्य आये और कहते गये कि सुधार तथा संशोधन की खूब आवश्यकता है। परन्तु उनमें शक्ति का अभाव था। उस समय स्वामी दयानन्द अपनी विलक्षण प्रतिभाशाली व्यक्तित्व और प्रचण्ड ब्रह्मबल के साथ कार्य क्षेत्र में कूद पड़े,"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैज्ञानिक युग में लाने वाले

पश्चिम के प्रसिद्ध विद्वान् श्री एमर्सन—

"बड़े होने के साथ एक शर्त है—गलत समझा जाना। हर महापुरुष की यही नियति रही, स्वामी दयानन्द की विशेष रूप से, क्योंकि उन्होंने अनेक बाधाओं से जूझते हुए गहन अन्धकार में से होकर मार्ग बनाया था। इसलिए उनमें सन्तों की नम्रता और निरहंकारिता नहीं दिखायी देती; परन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि भारत के सांस्कृतिक व राष्ट्र के नव-जागरण में उनका स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उनकी मान्यताओं और सिद्धान्तों ने एक बार तो हीन भावग्रस्त इस जाति को अपूर्व उत्साह से भर दिया, और अन्धविश्वास तथा कुरीतियों के जाल से मुक्त होकर उसने गतिमय प्रगति के मार्ग को अपनाया था। वही आज हमें वैज्ञानिक युग में ले आया है।"

आर्यसमाज सर्वोत्कृष्ट समाज है

विदेशी विद्वान् सर एडवर्ड डग्लास मेकगेलन ने भारत भ्रमण करके अपने अनुभवों में आर्यसमाज को शुद्ध धार्मिक बताते हुए लिखा है—

"पंजाब में जितनी समाजें हैं, उनमें आर्यसमाज सर्वोत्कृष्ट है। इस संस्था के संस्थापक स्वामी दयानन्द काठियावाड़ के ब्राह्मण थे। आर्यसमाज का सामाजिक कार्यक्रम स्वतन्त्र और लोकप्रिय है। आर्यसमाज राजनैतिक सभा या सोसाइटी नहीं, परन्तु एक धार्मिक समाज है। आर्यसमाज बाल-विवाह की विरोधी, विधवा विवाह की सहायक, और स्त्री शिक्षण की प्रचारक है। यह अनाथालय, पाठशालाएं, चिकित्सालय और अनेक लाभदायक संस्थाएँ स्थापित करती है। आर्यसमाज का संगठन बहुत ही उत्तम है। उस पर यह दोष लगाया जाता है कि वह सामाजिक रूप से अपने सदस्यों की चेष्टाओं को राजकीय क्षेत्र में पूरी सहायता दे रही है, परन्तु आर्यसमाज राजनैतिक सभा या सोसायटी नहीं, लेकिन धार्मिक समाज है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नवीन शुद्ध हिन्दू धर्म के जन्मदाता

सुधारवादी, लेखक, पश्चिम को अन्धविश्वासी मान्यताओं से छुड़ाने वाले श्री एस० एल० मिकाऐल—

"मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती को सदैव गत शताब्दी के उन महा पुरुषों में से एक समझता रहा हूँ, जिन्होंने परम हंस रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द जैसे महान् पुरुषों की तरह नवीन हिन्दू धर्म की गहरी और दृढ़ नींव डाली है और इसको पौराणिक भ्राँतियों से शुद्ध कर दिया।"

आला इन्सान

महर्षि समकालीन थियोसीफिकल सोसाइटी के प्रधान, प्रसिद्ध पाश्चात्य सुधारक कर्नल अलकाट ने महर्षि की मृत्यु पर निम्न संवेश दिया—

"उनकी मृत्यु से भारत ने अपने योग्यतम पुत्रों में से एक को खो दिया। हमारा स्वामी जी से पत्रव्यवहार होता था। सचमुच वे एक आला इन्सान ही नहीं फरिश्ते थे।"

वह मर कर भी अमर हैं

फेंच के प्रसिद्ध लेखक एव विचारक श्री पोल रिचर्ड—

"स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि थे। उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फेंके गये ईंट-पत्थरों को शान्तिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होंने अपने में महान् भूत और भविष्य को मिला दिया। वह मर कर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव मानव को कारागार से मुक्त करने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है—"आर्यावर्त, उठ जाग, समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर, आगे बढ़।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाति भेद के नाशक

जर्मनी के प्रसिद्ध साहित्यकार, वेदानुरागी, प्रोफेसर डा० विण्टरनीज—

"हमें वेदों के अध्ययन को प्रबल प्रोत्साहन देने और यह सिद्ध करने में कि मूर्तिपूजा वेद-सम्मत नहीं है, स्वामी दयानन्द के महान् उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिये। आर्यसमाज के प्रवर्तक वर्तमान जाति की मूर्खता और इसकी हानियों के विरुद्ध अपने अनुयायियों को तैयार करने के अतिरिक्त यदि और कुछ भी न करते तो भी वह वर्तमान भारत के बड़े नेता के रूप में अवश्य सन्मान पा जाते।"

एकेश्वरवादी

यूरोपीयन विद्वान् श्री मोनियर विलियम—

"स्वामी दयानन्द एकेश्वरवादी, वेद पर अपने सिद्धान्तों को मानने वाले। प्रगति समर्थक तथा देशोद्धारक थे।"

वेदानुयायी

ब्रिटेन के भूतपूर्व स्वर्गीय प्रधान मन्त्री श्री रेमजे मैकडानल्ड—

"आर्यसमाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है, भारत चुना हुआ देश है और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है।"

मूर्तिपूजा के विरोधी

यूरोप के सुधारवादी विद्वान् नेता सर वेलण्टाइन चिरोल—

"स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त उनके 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रंथ में निहित हैं। यही सिद्धान्त वेदभाष्य—भूमिका में है। स्वामी दयानन्द एक धार्मिक सुधारक थे। उन्होंने मूर्तिपूजा से अविराम युद्ध किया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वराज्य आन्दोलन के जन्मदाता

पाश्चात्य विद्वान् श्री ग्रास ब्रौण्ड—

"वर्तमान स्वराज्य आन्दोलन के कारण स्वामी दयानन्द की गिनती भारत के निर्माणकर्ताओं में स्वीकार करनी ही चाहिए। स्वामी दयानन्द एक महान् तथा पुण्यशाली व्यक्ति थे। वे भारतवर्ष के कीर्ति-स्तम्भ थे यह सब को स्वीकार करना पड़ेगा। उनको खोकर भारत को महान् शोचनीय नुकसान हुआ है।"

जगद्गुरु

लण्डन के महान् शिक्षा शास्त्री, मोरल एजुकेशन के मन्त्री श्री मि० फौक्स पिट्

"मेरी सम्मति में स्वामी दयानन्द एक सच्चे जगत् गुरु और सुधारक थे।"

भारत के सर्वोत्तम महापुरुष

श्री जी० एस० अरुण्डेल के विचार–

महर्षि दयानन्द ने भारत और संसार मात्र की जो सेवा की है, उसे मैं भली-भांति जानता हूं। वह भारतवर्ष के सर्वोत्तम महा पुरुषों में से थे। स्वामी जी ने मातृभूमि की सब से बड़ी सेवा यह की है कि उस में जातीय शिक्षा का विचार पैदा कर दिया है। जातीय शिक्षा क्या है? यही कि हमारी शिक्षा पद्धति हमारी जातीय आवश्यकताओं के अनुसार देवें और उस में हरेक विद्यार्थी को उनके धर्मानुसार धार्मिक शिक्षण दिया जाए।"

राष्ट्र के गौरव

कांग्रेस के संस्थापक, श्री ए० ओ० ह्यूम—

"स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के विषय में कोई मनुष्य कैसी ही राय कायम कर ले परन्तु यह सब को मान लेना पड़ेगा कि स्वामी दयानन्द अपने देश के लिये गौरव रूप थे। दयानन्द को खोकर भारत ने बहुत खोया है। वह एक विशाल और श्रेष्ठ पुरुष थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परम सत्य-भक्त

पाश्चात्य विद्वान् विचारक एवं लेखक श्री एस० एस० पोलक—

"स्वामी दयानन्द एक महान् आत्मा और निर्भय पुरुष थे। वे अपने धार्मिक विश्वासों पर अटल रहे, इसलिए नहीं कि वह अपने विचारों के पक्षपाती थे, परन्तु इसलिए कि वह सत्य के परम भक्त थे। इसीलिये ही भारतवासी तथा अन्य देशों वाले उन पर अटूट श्रद्धा रखते हैं।"

सत्यप्रेमी

पाश्चात्य विद्वान् रेवरेण्ड सी० एफ० एण्ड्रूज—

"स्वामी दयानन्द के उच्च व्यक्तित्व और चरित्र के विषय में निःसन्देह सर्वत्र प्रशंसा की जा सकती है। वे सर्वथा पवित्र तथा अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करने वाले महानुभाव थे। वह सत्य के अत्यधिक प्रेमी थे।"

महान् दार्शनिक

यूरोप के प्रसिद्ध साहित्कार श्री फ्रेडरिक फैनथोम—

"उन (स्वामी दयानन्द) जैसा दार्शनिक सम्भवतः भारत में फिर कभी उत्पन्न नहीं होगा।"

स्वराज्य प्राप्ति के इच्छुक

विदेशी विद्वान् न्यायमूर्ति जस्टिस पी० हेरीसन—

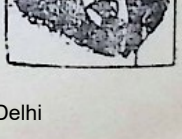

"बहुत से धार्मिक तथा सदाचार सम्बन्धी कारणों के कारण हिन्दू परतन्त्र जाति बनी, उस का ऋषि दयानन्द ने खेद व्यक्त किया था। दयानन्द के प्रचार का मुझे एक उद्देश्य दिखाई देता है—कि देश को स्वराज्य प्राप्त हो।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानवता के नेता

श्री एस० डी० स्टोक्स—

"निःशंक स्वामी दयानन्द जी एक महापुरुष, संस्कृत के प्रगाढ़ पण्डित, उत्कृष्ट साहसी और स्वावलम्बी तथा मानवता के नेता थे।

प्राचीन साहित्य में प्रेम पैदा करने वाले

अमेरिका की प्रसिद्ध हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर श्री डब्ल्यू० आनेष्ट हार्किंग—

"प्राचीन साहित्य एवं प्रथाओं को बनाये रखते हुए भारतीय युवक की रुचि का वर्त्तमान सभ्यता के गुणों के साथ सम्पर्क स्थापित रखना—वर्त्तमान महान् परिवर्तन की कठिन परिस्थिति में एक महान् कार्य है। इसलिये इस के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के हम अति कृतज्ञ हैं।"

सत्य के महान् पुजारी

पाश्चात्य विद्वान्, श्री रेवरेन्ड टी० डी० सले०

"स्वामी दयानन्द ने जिस को सत्य माना, उस को स्वतन्त्रता से स्वीकार किया। जिस को निकृष्ट और मिथ्या माना, उस को लोगों के सामने निडरतापूर्वक पेश किया।"

अपने राष्ट्र के उद्धारक

ईरान के भूतपूर्व न्याय-मन्त्री श्री रहीम जाफा सफाखी—

"स्वामी दयानन्द की हिन्दू धर्म तथा नैतिक और सामाजिक क्षेत्र में अपने राष्ट्र के उद्धार के लिये दी गई सेवाएं महान् हैं। उस का वर्णन नहीं किया जा सकता। इससे उनके पुरुषार्थ के लिये मैं उन्हें अभिनन्दन देता हूँ।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महान् पुरुष

जापान के प्रसिद्ध विचारक श्री वैरन हयाशी—

"भारत ने स्वामी दयानन्द के रूप में एक महान् पुरुष को जन्म दिया।"

भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थानकर्त्ता

कोलम्बो श्रीलंका के सुप्रसिद्ध नेता श्री एस० आर० बिता—

"भारतीय संस्कृति का जो पुनरुत्थान हम देख रहे हैं उसका अधिकाँश श्रेय स्वामी दयानन्द सरस्वती को ही है।

हिन्दू जाति के रक्षक

नेपाल के युवराज हिन्दुत्व हृदय सम्राट्, श्री नरेन्द्र शमशेरजङ्ग राना बहादुर–

"जिस समय लोग अपने धर्म को छोड़कर इधर-उधर विधर्मी होते चले जा रहे थे उस समय विश्वास था कि अब हिन्दू धर्म का नामलेवा मिलना कठिन होगा। उस समय अपने नियमानुसार परम पिता परमात्मा ने धर्म व जाति की रक्षा के लिए अपने परम भक्त और प्यारे पुत्र बालब्रह्मचारी स्वामी दयानन्द को भेजा, जिन्होंने हिन्दू जाति को तो विधर्मी होने से बचाया ही, किन्तु भूल से जो गये हुए थे उनको वापिस लेने का भी मार्ग दिखाया। इसी से आज हिन्दू जाति का नाम मौजूद है। हमें इसके लिए स्वामी जी महाराज को धन्यवाद देना चाहिए। विद्या और शिक्षा के बारे में जो काम स्वामी जी ने किया है, वह अनुकरणीय है।"

राष्ट्रीय एकता के प्रचारक

तेहरान (ईरान) के प्रसिद्ध मिनिस्टर आफ जस्टिस श्री रहीम जादा सफवी—

"मुझ सरीखे प्रत्येक प्राच्य का यह कर्तव्य है कि वह महर्षि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द सरस्वती द्वारा भारत की राष्ट्रीय एकता के लिये किये गये महान् कार्य की प्रशंसा करे।"

राष्ट्रीय आत्मसम्मान बढ़ाने वाले

नार्वे के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं प्राच्य विद्या विशारद श्री स्टेन कोनो पी० ऐच० डी०—

"हम वैदिक आर्यों की सन्तान हैं—राष्ट्रीय आत्मसम्मान को दृढ़ करने वाला यह विश्वास हमें स्वामी दयानन्द सरस्वती की कृपा से प्राप्त हुआ है।"

संसार के प्रत्येक व्यक्ति को दुखों से छुटकारा दिलाना महर्षि दयानन्द का एकमात्र उद्देश्य था। काश, कि सभी शांति के संदेशवाहक महर्षि के मार्ग पर चल सकते है—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के

विद्वानों, राजनीतिज्ञों और विचारकों की हार्दिक श्रद्धांजलियां

★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१८५७ के राष्ट्रीय संग्राम के दमन के बाद वीर श्रेष्ठ दयानन्द ने देश को जगाया, उठाया और आगे बढ़ने का पाठ पढ़ाया ।

यह कल्पना भी भयावह है कि यदि दयानन्द न होते तो—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सच्चे मार्ग के दिग्दर्शक

नोबल पुरस्कार विजेता विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर को गांधी जी गुरुदेव कह कर पुकारते थे और महाकवि महर्षिजी को "गुरुदेव" कह कर निम्न प्रकार श्रद्धांजलि देते हैं–

"मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को जिस की दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन में भारतीय जीवन के सब अङ्गों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम हो।

.....मैं आधुनिक भारत के मार्ग-दर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ, जिस ने देश की पतित अवस्था में भी हिन्दुओं को प्रभु की भक्ति और मानव-समाज की सेवा के सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पतितों को पावन करने वाले

दिल्ली के चान्दनी चौक में विशाल जनसमूह खड़ा था गोरा पल्टन संगीनें तान कर खड़ी थी। इतने में एक तेजस्वी आंखों वाला विशालकाय संन्यासी छाती के बटन खोलते हुए आगे बढ़े और कहने लगे "चलाओ गोली"। यह वही स्वाधीनता संग्राम का अमर शहीद संन्यासी श्रद्धानन्द था जो महर्षि जी से मिलने के पूर्व गिरी हुई अवस्था को प्राप्त था।

'ऋषिवर! आपकी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय-पट पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते आपके स्मरण-मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। आपने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? परमात्मा के बिना जिनकी पवित्र गोद में आप इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि आपके उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूँ कि आपके सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया।

मैं क्या था, क्या बन गया और क्या हूँ, यह सब आपकी कृपा का ही परिणाम है।

आप वाणी द्वारा प्रचार करने वाले केवल तत्ववेत्ता ही न थे किन्तु जिन सच्चाइयों का आप संसार में प्रचार करना चाहते थे उनको क्रिया में लाकर सिद्ध कर देना भी आपका ही काम था। भगवान् श्रीकृष्ण की तरह आपके लिए भी तीनों लोकों में कोई कर्तव्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ाष नहीं रह गया था, परन्तु आपने भी मानव-संसार को सीधा ार्ग दिखलाने के लिए कर्म की उपेक्षा न की।

भगवान् ! मैं आपका ऋणी हूँ। उस ऋण से मुक्त होना चाहता । इसलिए जिस परमात्मा की असीम गोद में आप परमानन्द का नुभव करते हैं उसी से प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझे आपका सच्चा शष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।"

महर्षि दयानन्द तपोमूर्ति थे

राष्ट्र के महान् तपस्वी नेता भारत-भूषण महामना श्री मदनमोहन मालवीय जी—

"महर्षि दयानन्द तपोमूर्ति थे। उन्होंने ारत में दिव्य ज्योति प्रकाशित की थी। उन्होंने िन्दू समाज को पुनर्जन्म देने के सब प्रयत्न किये । वे भारत को स्वतन्त्र तथा दिव्य देखना चाहते । आर्यकाल को पुनः लाने के लिये वे प्रयत्न-ील रहे। उन्होंने मृतप्राय हिन्दू जाति में पुनः प्राण संचार किया ा। वे हिन्दू संस्कृति की अप्रतिम प्रतिमा तथा भारत माता के अक्षय ात्र थे।"

हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तानियों के उद्घोषक

भारत-भक्त, स्त्री-नेता, लेखिका, तेजस्वी क्ता श्रीमती एनी बीसेण्ट ने महर्षिजी को 'हिन्दु-ेतान, हिन्दुस्तानियों का सर्व प्रथम नारा लगाने ाले' लिखते हुए निम्न शब्दों में अपनी श्रद्धाञ्जलि ो है—

"महर्षि दयानन्द ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दुस्तान हिन्दु स्तानियों के लिए" का ारा लगाया था स्वामी दयानन्दने वेदों तथा पनिषदों द्वारा भारत के प्राचीन गौरव को सिद्ध करके बता दिया ौर संसार को दिखा दिया कि भारतवर्ष दर्शन-शास्त्र तथा आध्या-मिक विद्या की खान (भण्डार) है। जिससे भारत में रहने वाले लोग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानते हैं कि "भारत की प्राचीन महिमा तथा गौरव पागलों का प्रलाप नहीं, परन्तु सत्य है।"

.....आर्यसमाज के लिये मेरे हृदय में शुभ इच्छाएं हैं और उस महान् पुरुष ऋषि दयानन्द के लिये, जिसका आप आर्य आदर करते हैं, मेरे हृदय में सच्ची पूजा की भावना है।"

आधुनिक ऋषियों में महान्

गांधीजी ने जो कार्य किया, उस में प्रेरणा महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ली गई। गांधीजी के आन्दोलनों में अधिकतम संख्या आर्यसमाजियों की रहती थी। गांधी जी ने कहा है—

"महर्षि दयानन्द के विषय में मेरा मंतव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिकऋषियों, सुधारकों श्रेष्ठ पुरुषों में से एक थे। उनका ब्रह्मचर्य, विचार-स्वतन्त्रता, सर्व-प्रति प्रेम, कार्य-कुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। उन के जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत ही पड़ा है। मैं जैसे-जैसे प्रगति करता हूँ, वैसे-वैसे मुझे महर्षिजी का बताया मार्ग दिखाई देता है। ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के पश्चात् जनता के साथ सीधा सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि दयानन्द ने खोज निकाला। इस का यश महर्षि दयानन्द एवं उनकी आर्यसमाज को प्राप्त है। महर्षि दयानन्द तथा उनकी आर्यसमाज ने प्रजा में नवचेतना पैदा किया है। हिन्दू समाज की अनेक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय शिक्षण, स्त्री शिक्षण तथा दलितोद्धार आदि न भुलाई जा सकें जैसी राष्ट्र की महान् सेवा की हैं। मुझे आर्यसमाज बहुत ही प्रिय है। महर्षि दयानन्द के इस पवित्र देशोपकारी कार्य का कभी भी अपमान होगा तो मैं उस को महापाप समझूंगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदों के निर्दोष व्याख्याकार

महान् क्रान्तिकारी, देशभक्त, योगिराज श्री अरविन्द—

"वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक, विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था और इस प्रकार मेरे समक्ष आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति-सम्पन्न मूर्ति उपस्थित होती है। इन दो शब्दों का जो कि हमारी भावनाओं के अनुसार एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं, मिश्रण ही दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है। उसके व्यक्तित्व की व्याख्याएं की जा सकती हैं—एक मनुष्य जिसकी आत्मा में परमात्मा है, चर्म-चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों में इतनी शक्ति है कि जीवन तत्व से अभीष्ट स्वरूप वाली मूर्ति गढ़ सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर सके। वह स्वयं दृढ़ चट्टान थे। उनमें दृढ़ शक्ति थी कि चट्टान पर घन चला कर पदार्थों को सुदृढ़ व सुडौल बना सकें। प्राचीन सभ्यता में विज्ञान भेद विद्यमान हैं, जिनमें से कुछ को अर्वाचीन विद्याओं ने ढूंढ लिया था, उनका परिवर्धन किया है और उन्हें अधिक समृद्ध या स्पष्ट कर दिया है, किन्तु दूसरे अभी तक निगूढ़ ही बने हुए हैं। इसलिये दयानन्द की इस धारणा में कोई अवास्तविकता नहीं है कि वेदों में विज्ञान-सम्मत तथा धार्मिक सत्य निहित हैं।

वेदों का भाष्य करने के बारे में मेरा विश्वास है कि चाहे अन्तिम पूर्ण अभिप्राय कुछ भी हो, किन्तु इन बातों का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उसने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिये निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया था। चिरकालीन अव्यवस्था और अज्ञान—परस्पर के अन्धकार में से सूक्ष्म और मर्मभेदी दृष्टि से उसी ने सत्य को खोज निकाला था। जंगली लोगों की रचना कही जाने वाली पुस्तक के भीतर उसके धर्म पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

था। ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों की कुञ्जी प्राप्त की है, जो युगों से बन्द थे और उनसे पटे हुए झरनों का मुख खोल दिया।

.....ऋषि दयानन्द के नियम-बद्ध कार्य ही उन के आत्मिक शरीर के पुत्र हैं, जो सुन्दर, सुदृढ़ और सजीव हैं जिन्होंने स्पष्ट और पूर्ण शान्ति से जान लिया था कि उन्हें किस कार्य के लिये भेजा गया है।"

स्वराज्य के सर्वप्रथम संदेश वाहक

'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' की घोषणा करने वाले श्री लोकमान्य तिलक ने "स्वराज्य" का सर्वप्रथम सन्देश वाहक—महर्षि दयानन्द को मानते हुये निम्न श्रद्धांजलि दी है—

"ऋषि दयानन्द जाज्वल्यमान नक्षत्र थे जो भारतीय आकाश पर अपनी अलौकिक आभा से चमके और गहरी निन्द्रा में सोए हुए भारत को जागृत किया। "स्वराज्य" के वे सर्व-प्रथम सन्देश वाहक तथा मानवता के उपासक थे"

मेरे मार्गदर्शक

श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, महर्षि दयानन्द के शिष्य थे। महर्षि जी प्रेरणा तथा आर्थिक मदद से ही आप विदेशों में गए और वहां वैदिक विचारधारा का प्रचार किया तथा देश को आजादी दिलाने के लिए लंदन में 'इण्डिया हाउस' स्थापित करके, वहाँ से क्रान्तिकारी कार्य करते रहे। वीर सावरकरजी आदि आपकी प्रेरणा से आगे बढ़े। लाला हरदयाल तथा सरदारसिंह राणा आदि क्रान्तिकारियों को आपने विदेशों में काफी मदर की—

"स्वामी दयानन्द सरस्वती को मैं अपना मार्ग दर्शक गुरु मानता हूँ। उनके चरणों में रहकरमैं ने बहुत कुछ पाया है। उनकी मुझ पर सदैव कृपा रहती थी। स्वामी जी की यह इच्छा थी कि विदेशों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में भी वैदिक विचारधारा का प्रचार हो, उन्होंने मुझे विदेशों में वैदिक संस्कृति का प्रचार करने की प्रेरणा दी।

मैंने राष्ट्र, जाति तथा समाज की भी जो सेवा की है, उसका श्रेय महर्षि दयानन्द को प्राप्त है। मैंने जो कुछ प्राप्त किया है, उसमें सब से बड़ा हाथ उस सर्वहितैषी, वेदज्ञ, तेजस्वी युगद्रष्टा का है। मुझे उस स्वतन्त्र विचारक का शिष्य होने में अभिमान है।"

स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा

महान् क्रान्तिकारी, सर्वस्व त्यागी, हिन्दू राष्ट्रपति स्वातन्त्र्य वीर सावरकर—

"महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा, हिन्दू जाति के रक्षक थे। उन के द्वारा स्थापित आर्य-समाज ने राष्ट्र की महान् सेवा की है और कर रही है। आजादी की लड़ाई में आर्य समाजियों का बड़ा हाथ रहा। महर्षि जी का लिखा अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" हिन्दू जाति की रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला ग्रन्थ है। "सत्यार्थप्रकाश" की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने महजब की शेखी नहीं मार सका।"

देशभक्ति की ज्योति जलाने वाले

भारत को आजादी दिलाने के लिए यूरोप में रह कर, महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा के सहकार से क्रान्ति पैदा करने वाले, उग्रवादी नेता—लाला हरदयाल—

"ऋषि दयानन्द ने भारतवर्ष के वृक्ष को जल सिंचन किया था। उनके शुभ प्रयास से विविध प्रकार के स्वादिष्ट फल मिले और मिलेंगे। स्वामी जी ने युवकों के हृदय में त्याग, परोपकार और देश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भक्ति की ज्योति जगाई थी। हिन्दू जाति की जो उन्नति दिखाई दे रही है, उसका श्रेय स्वामी जी को ही प्राप्त है। भारतवर्ष के इतिहास में स्वामी जी का नाम महान् सुधारकों की पवित्र श्रेणी में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।"

आधुनिक भारत के निर्माणकर्ता

आजाद हिन्द फौज के सर सेनापति एवं राष्ट्र को स्वतन्त्र देखने के अभिलाषी, अपने राष्ट्र के स्वाभिमानी सपूत नर-वीर श्री सुभाषचन्द्रबोस—

"महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया और जो उसके आचार-सम्बन्धी पुनरुत्थान तथा धार्मिक पुनरुद्धार के उत्तरदाता हैं। हिन्दू समाज का उद्धार करने में 'आर्यसमाज' का बहुत बड़ा हाथ है। रामकृष्ण मिशन ने बंगाल में जो कुछ किया, उससे कहीं अधिक आर्यसमाज ने पंजाब और उत्तर प्रदेश में किया है। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि पंजाब का प्रत्येक नेता आर्यसमाजी है। स्वामी दयानन्द को मैं एक धार्मिक और सामाजिक सुधारक तथा कर्मयोगी मानता हूँ। संगठन कार्यों में सामर्थ्य और प्रसार की दृष्टि से आर्यसमाज अनुपम संस्था है।

"..... .....संगठन कार्य, दृढ़ता, उत्साह और समन्वयात्मकता की दृष्टि से आर्यसमाज की समता कोई समाज नहीं कर सकता।"

वैदिक सूर्य

स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी, देवतास्वरूप, हिन्दु धर्म दिवाकर, त्यागवीर भाई परमानन्द एम० ए०—

"स्वामी दयानन्द एक ऐसे प्रकाश-स्तम्भ हैं, जिन्होंने असंख्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्यों को सत्य का मार्ग बतलाया है। उनके देश तथा देश की जनता पर किये गये उपकार सदैव अमर रहेंगे।

महर्षि, वर्तमान अन्धकार युग के लिये 'वैदिक सूर्य' थे। मैं अपने को उनका अनुयायी कहलाने में गर्व अनुभव करता हूँ। मैं उनके प्रशंसकों में हूँ।"

आत्मरक्षा का मार्ग दिखाने वाले महापुरुष

भारतीय जनसंघ के संस्थापक, प्रखर वक्ता, अखण्ड भारत के हामी आर्य संस्कृति के प्रेमी, बंगाल केसरी, काश्मीर की वेदी पर शहीद हुंने वाले नर वीर अमर शहीद डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी —

'भारत में अंग्रेजों के प्रभुत्व और पाश्चात्य शिक्षा के प्रवेश के कारण, यह खतरा उत्पन्न हो गया था कि एक दिन देश का जीवन और दृष्टिकोण राष्ट्रीयता से शून्य हो जायेगा। यह भी भय हुआ कि प्रतिक्रिया के तौर पर पुरानी रूढ़ियों और पद्धतियों के प्रति उत्पन्न अन्ध-श्रद्धा राष्ट्रीय जीवन और चरित्र की उचित उन्नति को रोकने का कारण बन जाय। जाति के जीवन की ऐसी नाजुक घड़ी में कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होकर आत्म-रक्षा का मार्ग दिखाने वाले महापुरुषों में महर्षि दयानन्द का स्थान बहुत ऊंचा है।

निःसन्देह यह परम सन्तोष की बात है कि महर्षि के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी आर्यसमाज ने धर्म के क्षेत्र में अपना दरवाजा सदा खुला रखा है।

महर्षि ने अपने ग्रंथ "सत्यार्थप्रकाश" में देश की राजनीतिक दशा पर भी स्पष्ट भाषा में अपना अभिमत प्रकट कर दिया है—

".....कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं।" क्या हमारी राजनीतिक दासता का इससे अधिक विशद तथा साहसपूर्ण विश्लेषण सम्भव है ?

.....ऋषि ने अपने देशवासियों तथा समस्त विश्व को 'सत्यार्थप्रकाश' के रूप में जो अविनश्वर वसीयत दी है, वह उनकी प्रकाण्ड प्रतिभा का प्रतीक है। इस ग्रंथ में वह हमारे सम्मुख एक उत्पादक कलाकार, समीक्षक, संहारक तथा निर्माता के रूप में प्रकट हुआ है।

.....ऋषि ने अपने दर्शन 'सत्यार्थप्रकाश' में एक ऐसे स्वतन्त्र भारत वर्तमान परिस्थितियों तथा अवस्थाओं में स्वकीय संस्कृति तथा सभ्यता की अमूल्य परम्पराओं के साथ सम-स्वर करके ही निर्माण कर सकता है।"

नवीन इतिहास के सर्जक

आर्यन नेशन के स्वप्नद्रष्टा, महान् क्रान्तिकारी देशभक्त, भारत की स्वाधीनता दिलाने के लिये देश-विदेश में क्रान्ति पैदा करने वाले सर्वस्व त्यागी राजा महेन्द्र प्रताप—

"अपने नवीन इतिहास पर ऋषि दयानन्द जी के जीवन ने विशेष असर की है, इसमें कोई शंका का स्थान नहीं है। कांग्रेस तथा गांधी जी को अनेक कार्यकर्त्ता ऐसे मिले, जो कि किसी न किसी प्रकार आर्य समाज की नई विचार धारा से रंगे हुए थे।

.....आर्य समाज क्रान्तिकारियों की संस्था है। इनके मेम्बरों में देश प्रेम की भावना है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं

"यह लाठियां अंग्रेज साम्राज्य की अर्थी में कील बन कर रहेंगी" की घोषणा करने वाले राष्ट्र के नररत्न, अमर शहीद लाला लाजपतराय—

"स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। संसार में मैंने सिर्फ उन्हें अपना गुरु माना है। आर्यसमाज मेरी माता है। इन दोनों की गोद में मैं खेला हूं। मेरा हृदय और मस्तक दोनों को उन्होंने घड़ा है। मेरे गुरु एक महान् स्वतन्त्र मनुष्य थे, इस का मुझे अभिमान है। उन्होंने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, सिखाया है।·····मेरे जीवन में जो हिस्सा खराब है वह मेरा अपना है। वह या तो मुझ को विरासत में मिला है या मेरे पूर्व जन्म के संस्कारों का फल है। लेकिन मेरे जीवन का जो जो हिस्सा अच्छा और लोगों में प्रशंसा योग्य है, वह सब आर्य समाज की बदौलत है। आर्य समाज ने मुझे वैदिक धर्म से प्यार करना सिखलाया, आर्य समाज ने मुझे प्राचीन आर्य सभ्यता का मान करना सिखलाया। आर्य समाज ने मुझे प्राचीन आर्यों से मेरा सम्बन्ध जोड़ा और मुझे उनका सेवक बनाया। आर्य समाज ने मुझे जाति से प्यार करना सिखाया। आर्यसमाज ने मुझे कुर्बानी का मार्ग-दिखलाया। आर्यसमाज ने मेरे अन्दर सत्य, धर्म और स्वतन्त्रता की रूह फूंकी। आर्य समाजने मुझे संगठन का पाठ पढ़ाया। आर्यसमाज ने शिक्षा दी कि समाज, धर्म और देश की सेवा करनी चाहिए और उन की सेवा में जो मनुष्य बलिदान करता है और दुःख उठाता है उसे स्वर्ग का राज्य मिलता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने सार्वजनिक सेवा के तमाम सबक आर्यसमाज में रहते हुए आर्य समाज से सीखे। आर्य समाज के क्षेत्र में मैंने अपने प्यारे मित्र बनाए। आर्यसमाज के क्षेत्र में ही मैंने सार्वजनिक जीवन की पवित्रता के नमूने देखे।

आर्य समाज के उपकार मेरे ऊपर अनगिनत और असीम हैं। अगर मेरा बाल-बाल भी आर्य समाज पर निछावर हो जाय तो भी मैं उन उपकारों से उऋण नहीं हो सकता।

यदि मैं आर्य समाज में दाखिल न होता तो ईश्वर ही जाने क्या होता, मगर यह सच है कि मैं आज जो कुछ हूँ वह न होता।"

चन्द्रशेखर आजाद आर्य समाजी कैसे बने ?

शहीद शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद को आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द का भक्त शहीद सम्राट श्री रामप्रसाद बिस्मिल ने बनाया। श्री मन्मथनाथ गुप्त के शब्दों में—

"अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में उनके (चन्द्रशेखर आजाद) धार्मिक विचारों में आर्यसमाजीपन आया और छुआछूत, मूर्तिपूजा आदि को वह निस्सार समझने लगे। बाद में भगतसिंह आदि के संसर्ग से धीरे-धीरे उन्होंने समाजवादोन्मुख धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण अपनाया..... निश्चय ही एक कट्टर ब्राह्मणवादी बालक से अग्र पंक्ति के क्रान्तिकारी प्रगतिशील बने।"

सरदार भगतसिंह आर्यसमाज की देन है

अमर शहीद सरदार भगतसिंह आर्यसमाज की देन थे—उनके छोटे भाई रणवीरसिंह के शब्दों में —

"आर्यसमाज में मेरे दादा सरदार अर्जुनसिंह जी शामिल थे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर मेरे पिता सरदार किशनसिंह जी और चाचा सरदार अजीतसिंह जी को महात्मा हंसराज जी तथा लाला लाजपतराय के साथ समाज का कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त रहा है। हम चारों नहीं बल्कि पांचों भाई यानी सरदार भगतसिंह जी भी डी० ए० वी० स्कूल में पढ़ते रहे हैं—और हमारे विचारों और मानसिक उन्नति भी बड़ी हद तक आर्यसमाज की देन है। इसलिए और बहुत दूसरे उपकारों के लिये हम आर्यसमाज के ऋणी हैं।"

सत्यार्थप्रकाश ने जीवन बदल दिया

शहीद सम्राट् श्री रामप्रसाद "बिस्मिल" जिन्होंने चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, अशफाक उल्ला, राजेन्द्र लाहिड़ी, शचीन्द्रनाथ, योगेशचन्द्र चटर्जी, मुकुन्दीलाल, विष्णुशरण दुब्लिश, भूपेन्द्रनाथ सान्याल, मन्मथनाथ गुप्त आदि को प्रेरणा दी थी, वे महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज के भक्त कैसे बने, वह उनकी 'आत्मकथा' जो उन्होंने फाँसी मिलने से पूर्व, फाँसी की कोठरी में लिखी थी—उसमें से उन्हीं के शब्दों में पढ़ —

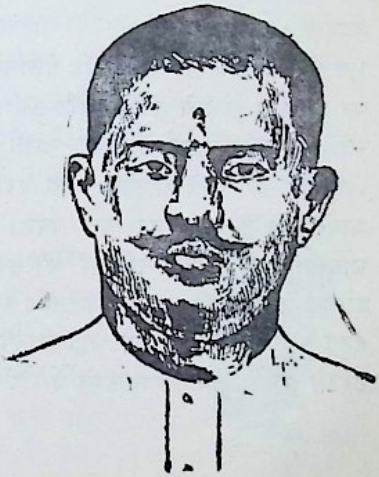

"देव मन्दिर में पूजा-पाठ करते देख, श्री मुन्शी इन्द्रजीत ने मुझे सन्ध्या करने का उपदेश दिया। वे उसी मन्दिर के पुजारी के पास आते जाते थे। पहले सन्ध्या क्या है वह जानने की कोशिश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की । श्री मुन्शी जी ने उसी अर्से में आर्य समाज सम्बन्धी बहुत सी जानकारी दी। उस के पश्चात् मैंने "सत्यार्थ प्रकाश" पढ़ा, और उससे जीवन का लक्ष्य बदल गया । "सत्यार्थ प्रकाश" ने मेरे जीवन के इतिहास का एक नया पृष्ठ खोल दिया।.....आर्यों तथा सनातनियों में शास्त्रार्थ हुआ । आर्यसमाज की ओर से पण्डित अखिलानन्द जी ने शास्त्रार्थ किया । वह शास्त्रार्थ संस्कृत में हुआ था । जनता पर खूब प्रभाव पड़ा । मेरे कार्य को देख कर मुहल्ले वालों ने पिता जी से मेरी शिकायत की । पिता जी ने मुझे कहा कि —"आर्यसमाज शास्त्रार्थ में हार गया, इसलिये अब तू आर्यसमाज से अपना नाम निकलवा दे ।" मैंने कहा—"आर्यसमाज के सिद्धान्त सार्वभौम हैं । उन्हें हराने की किसी में भी शक्ति नहीं है। पिता जी ने हठ पकड़ी और कहा—"यदि तुमने आर्यसमाज से त्यागपत्र न दिया तो रात्रि को मार दूँगा ।" "त्यागपत्र दो अथवा घर छोड़ो ।" मुझे लगा कि पिता जी का गुस्सा बहुत बढ़ गया है और उस अवस्था में कोई वस्तु दे दें तो परिणाम बहुत ही खराब आएगा । इसलिये 'गृह-त्याग' ही उचित समझा । उस समय मैं फकत एक कमीज पहने खड़ा था, और पैजामा उतार कर धोती पहन रहा था । पैजामे के नीचे लंगोट पहना हुआ था । पिता जी ने धोती खैंच ली, और कहा —'घर से निकल जाओ ।' मुझे भी गुस्सा आ गया। पिता जी के चरणों को स्पर्श करके घर छोड़ कर निकल गया ।.....— आर्यसमाज ही मेरा घर बन गया । वहीं रहने तथा सोने लगा । आर्यसमाज के संन्यासी-पण्डितों की सेवा करता था । आर्यसमाज के वार्षिक उत्सवों की व्यवस्था करता । स्वामी सत्यदेव जी का मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा । वे प्रायः शहाजहानपुर आर्यसमाज मन्दिर में आकर ठहरते और उपदेश किया करते थे ।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि के जीवन का प्रभाव यहां

शहीद वीर रोशनसिंह पर आर्यसमाज का प्रभाव—

"आर्यसमाज के पण्डितों और संन्यासियों के क्रान्तिकारी व्याख्यानों ने मुझ पर असर डाला। मैं आर्यसमाज में दाखिल हुआ। आर्यसमाज ने मेरे जीवन को बदल डाला। महर्षि दयानन्द के जीवन का मुझ पर बहुत असर पड़ा। मेरा वह गुरु है।"

नव दृष्टि-कोण के प्रदान कर्ता

स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति, तपोनिष्ठ, त्यागमूर्ति, आर्य सभ्यता के प्रतीक, श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद—

"महर्षि दयानन्द के उपदेशों ने करोड़ों लोगों को नवजीवन, नव-चेतना और नव-दृष्टिकोण प्रदान किया है। उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते, हमें व्रत लेना चाहिए कि उनके बताये गये मार्ग पर चल कर हम देश को सच्चा सुख शान्ति और वैभवपूर्ण बनायेंगे।"

प्रखर क्रान्तिवादी पुरुष

महान् दार्शनिक विद्वान्, तत्ववेत्ता, अनेक ग्रन्थों के लेखक स्वतन्त्र भारत के राष्ट्रपति श्री सर्वपल्लि डा० राधाकृष्णन्—

"जब देश पर संकट के बादल छाए हैं, तब हमें शत्रु की चुनौती को स्वीकार करके उस शिक्षा को याद करना है जो स्वामी दयानन्द ने हमें दी।

स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिवादी महापुरुष तो थे ही साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हम सबके लिए भारी महत्व है, क्योंकि आज भी हमारे समाज में बहुत सी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विभेदकारी बातें विद्यमान हैं। हम अपनी फूट के कारण ही अतीत में पराधीनता के पाश से जकड़े गये थे। हमारे पारस्परिक भेद और असहिष्णुता ही हमारे पतन का कारण बनी थी। हमें अतीत की भूलों से शिक्षा ग्रहण करनी ही होगी, तभी हमारा भविष्य उज्ज्वल और गौरवशाली हो सकेगा। आज की स्थिति का सामना महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चल कर ही किया जा सकता है।

जब आध्यात्मिक अव्यवस्था, सामाजिक कुरीतियां तथा राजनैतिक दासता देश को जकड़े हुए थी, तब महर्षि दयादनन्द ने राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। सत्य, सामाजिक एकता और एक ईश्वर की आराधना का संदेश उन्होंने दिया। उन्होंने शिक्षा व ईश्वर पूजा की स्वतन्त्रता सभी के लिए उपलब्ध करने पर बल दिया था। भारत के संविधान में सामाजिक क्षेत्र के लिए अनेक व्यवस्थाएँ महर्षि दयानन्द के उपदेशों से प्रेरणा लेकर ही की गई हैं।

स्वामी जी ने "स्वराज्य" का जो सबसे पहले सन्देश हमें दिया था, उसकी आज हमें रक्षा करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं।

"उन्होंने हमें यह भी महान् सन्देश दिया था कि हम सत्य की कसौटी पर कस कर ही किसी बात को स्वीकार करें।"

हिन्दुत्व उद्धारक

प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ श्री राजगोपालाचार्य—

"स्वामी दयानन्द की शिक्षाएँ महान् हैं। वे हिन्दुत्व में स्थाई स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। स्वामी जी की शिक्षाओं को अपनाने से हिन्दुत्व परिपक्व बनेगा। स्वामी जी को हिन्दुत्व का उद्धारक कहा जा सकता है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिना साम्प्रदायिक राजनैतिक पुरुष

आर्य सभ्यता की मूर्ति, हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक, कांग्रेस अध्यक्ष राज ऋषि श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन—

"मैं स्वामी दयानन्द जी को साम्प्रदायिक नहीं मानता। मेरे विचार में वे महान् थे। उनका धर्म विस्तृत था, मैं उनको राजनैतिक पुरुष भी मानता हूँ।"

मेरे सच्चे राजनैतिक गुरु

"राष्ट्र के महान् नेता, दीन-दुःखियों के मददगार, तपस्वी, स्वाधीनता संग्राम के महान् योद्धा, प्रेसीडेन्ट विट्ठल भाई पटेल—

"बहुत से लोग महर्षि दयानन्द को सामाजिक और धार्मिक सुधारक कहते हैं, परन्तु मेरी दृष्टि में तो वे सच्चे राजनैतिक थे। उन्होंने ही इस देश में सर्वप्रथम स्पष्ट घोषणा की कि—"चाहे कितना भी विदेशी राज्य अच्छा क्यों न हो, तो भी वह अपने स्वराज्य के बराबर नहीं हो सकता। ४० वर्षों से कांग्रेस का जो कार्य-क्रम रहा है; वह सब कार्य-क्रम आज से ६० वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने देश के सामने रखा था। सारे देश में एक भाषा,

खादी, स्वदेश-प्रचार, पंचायतों की स्थापना, दलितोद्धार, राष्ट्रीय और सामाजिक एकता, उत्कट देशाभिमान और स्वराज्य की घोषणा, यह सब महर्षि दयानन्द ने देश को दिया है। वर्तमान कांग्रेस का प्रत्येक अंश भगवान् दयानन्द ने ही बनाया है। सचमुच हम भाग्यहीन थे। यदि ६० वर्ष पहले इस कार्य-क्रम को समझ कर आचरण किया होता तो भारतवर्ष कब का स्वतन्त्र हो गया होता।

"मैं ऋषि दयानन्द को अपना राजनैतिक गुरु मानता हूँ। मेरी दृष्टि में तो वे महान् विप्लववादी नेता और राष्ट्र विधायक थे।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संसार के पूजनीय

गाँधी जी की धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरबा गांधी—

"स्वामी दयानन्द के जीवन में सत्य की खोज दिखाई देती है। इसलिये वे केवल आर्यसमाजियों के लिये ही नहीं, परन्तु समग्र संसार के लिए पूजनीय हैं।"

भारत को उन्नति के मार्ग पर ले जाने वाले

प्रखर वक्ता, स्वाधीनता संग्राम की प्रसिद्ध सेना नेत्री, श्रीमती सरोजनी नायडू —

"स्वामी दयानन्द वर्तमान काल की महान् शक्ति थे। उनका सारा उपदेश वास्तव में प्राचीन वैदिक धर्म का सच्चा निचोड़ और तत्त्व था। वे जाति को पुनर्जीवन देने वाले तथा अपने प्रभाव और आदर्श दूर तक ले जाने वाले थे। भारतवर्ष में इस समय आत्मिक शक्ति प्रकट करने की आवश्यकता है। स्वामी दयानन्द जैसे दीर्घदर्शी और विचारशील पुरुष ही भारत को सुधार का मार्ग बता सकते हैं और उसे उन्नति के शिखर पर ले जा सकते हैं।"

बुराइयों से बलवा पुकारा

लौह पुरुष, हिन्दुत्व अभिमानी, राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने वाले, आजाद भारत के प्रथम लोकप्रिय गृहमन्त्री श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल—

"स्वामी दयानन्द जी के राष्ट्र प्रेम के लिए, उनके द्वारा उठाये गये बलो, उनकी हिम्मत, ब्रह्मचारी जीवन और अन्य कई गुणों के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए मुझे उनके प्रति मान है। अपने समाज में उस समय जो-जो त्रुटियां थीं, खराबियां, कुरीतियां, अज्ञानता, वहम और बुराइयां थीं, उनको स्वामी जी ने दूर करने के लिए बलवा पुकारा। यदि स्वामी जी न होते तो, हिन्दू समाज की क्या हालत होती, इसकी कल्पना भी कठिन था।

आज देश में जो भी कार्य चल रहे हैं, उनका मार्ग स्वामी जी वर्षों पूर्व बता गये हैं।

शताब्दियों से ऐसे महापुरुष बिरले मिलते हैं। समाज में जब बुराइयां घर कर जाती हैं, तब ईश्वर ऐसी विभूतियों को भेजता है। ऐसे महापुरुष कभी मरते नहीं हैं, वे अमर होते हैं। उनका जीवन हमारे लिये आदर्श बन जाता है।"

स्वामी दयानन्द बड़े आदमी थे

स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री, समाजवाद के झण्डाधारी, शान्तिदूत, पण्डित जवाहरलाल नेहरू जिन्होंने महर्षि जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपनी भस्मी को महर्षि जी के अनुसार खेतों में डालने का आदेश दिया था।

"स्वामी दयानन्द जी बड़े आदमी थे। मैं कोई खास सीधा उनके असर में नहीं आया, यानी मेरा मतलब नहीं कि उनसे मिला। वो तो नहीं मिला, जाहिर है लेकिन उनको मैंने आर्य समाज के जरिये से जाना। जाहिर है कि ऊंचे दर्जे के आदमी थे, बहुत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाइटेलिटी के, जानके···स्वामी दयानन्द ने मजहबों की खराबियों को ठीक किया, काफी।

आर्यसमाज का तो एक बड़ा हिस्सा पढ़ाई में था, स्कूल कॉलेज वगैरा बनाने में, कुछ आम लोगों को सिखाना, अपने ऊपर भरोसा करना, अपनी संस्कृति में कुछ गुरूर होना, क्योंकि हमारी मुश्किल यह हो गई थी कि हम अपनी चीजों को कुछ बुरा समझने लगे थे। और वो बुरा होता है किसी भी जाति के लिए कि अपने से घृणा करे, अपनी चीजों से। अपनी चीजें बुरी भी होती हैं। उनको छोड़े, लेकिन बुनियादी तौर से बुरा होता है, उन्हें बुरा समझना। तो एक तो उनका यह असर हुआ कि खेंचा उन्होंने और इस तरह से उनमें आत्मविश्वास बढ़ाया। आर्य समाज ने बहुत कुछ हमारे पुराने रिवाज जो ग़लत थे, उनके खिलाफ बहुत कुछ किया। आर्य समाज ज्यादा फैली, कुछ उसमें लड़ने का ढंग जरा ज्यादा आया। इसमें कुछ खूबियाँ भी होती हैं, दम होता है आगे बढ़ने का।

स्वामी दयानन्द का १८५७ के विद्रोह में हाथ था—इसका मुझे ख्याल नहीं है, क्योंकि मैं इतिहास का कोई बड़ा जानकार नहीं हूँ····· हाँ, बहुत सारे आर्य समाजियों का राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा रहा। इसमें कोई शक नहीं।

·····आर्य समाज ने लड़कों और लड़कियों की शिक्षा, स्त्रियों की दशा के सुधार और दलितों को ऊंचा उठाने की दिशा में बड़ा अच्छा कार्य किया है।

सोये समाज को जागृत करने वाले

हिन्दुत्व अभिमानी, प्राचीनता के प्रतीक राष्ट्रीय, स्वयम् सेवक संघ के तपस्वी-त्यागी-कर्मठ संचालक श्री गुरु गोलवलकर—

"अपने पणे के उदीप्त स्वाभिमान के साथ महर्षि दयानन्द ने सोये हुए समाज को जागृत किया। अनुकरण की गुलाम वृत्ति पर छा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करके स्वतन्त्र प्रतिभायुक्त राष्ट्रीय श्रद्धा का सन्देश दिया। जीवन का कोई भी कार्य क्षेत्र उन के विचारों से अछूत नहीं रहा।"

देश तथा समाज के उद्धारक

स्वतन्त्र भारत के भूतपूर्व गृहमन्त्री पंडित गोविन्दवल्लभ पंतजी

"स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देश तथा समाज की मानसिक एवं बौद्धिक उन्नति के लिये जो कुछ किया है, उस के लिये राष्ट्र हमेशा उन का ऋणी रहेगा।"

महान् राष्ट्र नायक

स्वतन्त्र राष्ट्र के लोकप्रिय द्वितीय प्रधान मन्त्री लालबहादुर शास्त्री महर्षि के परम भक्तों में से एक थे। आपने राष्ट्र सेवा की दीक्षा महर्षि के महान् तेजस्वी शिष्य पंजाब केसरी लाला लाजपतराय से ली थी।

"महर्षि दयानन्द महान् राष्ट्र नायक नेता और क्रान्तिकारी महापुरुष थे। उन्होंने व्यावहारिक रूप से जीवन के प्रत्येक पहलू में अपनी छाप छोड़ी है। स्वामी जी को श्रद्धा पूर्वक स्मरण किया जाना चाहिए। उन्होंने देश में धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्र में जो काम किया वह अभूतपूर्व है। उन्होंने जो काम पकड़ा उसे पूरी तरह से निभाया। उन्होंने हिन्दू धर्म का कल्याण किया। वह बड़े दृढ़ व्यक्ति थे। उन जैसे क्रान्तिकारी नेता होना बिरले ही लोगों का काम होता है। उन्होंने ऐसे समय में देश का नेतृत्व किय जिस समय बुराइयों की ओर संकेत करना भी कठिन काम था। उन्होंने हिन्दी राष्ट्रभाषा होने का घोषनाद किया और छूत-छात तथा जात-पांत के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा। स्वराज्य और स्वदेशी की उन्होंने ऐसी लहर चलाई, जिससे इण्डियन नेशनल कांग्रेस के निर्माण की पृष्ठ भूमि तैयार हो गई।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दी के महान् प्रचारक

भारत के प्रसिद्ध सिद्धान्तवादी नेता, भूतपूर्व केन्द्रीय सरकार के वित्त मन्त्री, गुजरात केसरी, विचारक, लेखक, वक्ता श्री मोरारजी देसाई—

"शुरु में ही मैं कह देना चाहता हूँ कि हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी भाषा-भाषियों ने नहीं, अहिन्दी-भाषा-भाषियों ने प्रस्तावित किया था। मोटे तौर पर दो नाम मेरे स्मरण में हैं—स्वामी दयानन्द और महात्मा गाँधी। दोनों ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा स्वीकार ही नहीं किया, उसे हृदय से अपनाया और उस के जरिये सारे देश में जागरण का शंख फूंका। बंकिमचन्द और श्रीनिवास शास्त्री ने उस का समर्थन किया था।

स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी इस देश की जनता के दिल तक पहुँचना चाहते थे। शासक तो वे थे नहीं, जो सत्ता के जरिये जनता पर अपनी बात प्रकट कर देते। वे तो जनसेवक थे। प्रेम और सेवा के जरिये ही जनता को अपने कर्त्तव्य का बोध कराना चाहते थे। इस के लिये उन्होंने ऐसी भाषा की खोज की जिस के द्वारा वे ज्यादा लोगों के साथ सम्पर्क कायम कर सकें।

उन्होने देखा कि देश में एक ऐसी भाषा प्रचलित है, जिस क सहारे सदियों तक सन्तों ने देश के बहुत बड़े भाग में प्रेम, भक्ति और सेवा का प्रचार किया है। स्वभाव से दोनों महापुरुष सन्त थे। इस लिये इस भाषा को खोजने और परखने में उन्हें ज्यादा कठिनाई नहीं हुई। यह भाषा हिन्दी थी और किसी न किसी रूप में, काफी तादाद में लोग इसे समझते थे।

..... महर्षि दयानन्द ने पददलित भारत का पुनरुत्थान किया तथा राष्ट्र को नव-जीवन का संदेश दिया। उन्होंने सामाजिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रान्ति की एवं अन्ध श्रद्धा को दूर करने की कोशिश की और राष्ट्र का निर्माण किया।"

एक संयुक्त भाषा के इच्छुक

वर्तमान स्वतन्त्र भारत के गृह मन्त्री श्री वाई० बी० चह्वाण महर्षि के परम भक्तों में से एक हैं।

"स्वामी दयानन्द जी अन्धकार दूर करने वालों में अग्रणी थे। अपनी दिव्यदृष्टि से उन्होंने भारत का सांस्कृतिक निर्माण किया। स्वामीजी ने राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने की प्रेरणा की और उस वातावरण को तैयार किया जिससे पीछे प्रेरणा पाकर, गांधी जी, लोकमान्य तिलक तथा पं० नेहरू जैसे नेताओं ने काम करके देश को स्वतन्त्र कराया। स्वामी जी ने भारत में एक नई व्यवस्था का आधार रखा। उन दिनों में ही उन्होंने अनुभव कर लिया था भारत को संगठित रखने के लिए एक संयुक्त भाषा आवश्यक है और केवल 'हिन्दी' ही वह काम कर सकती है।"

सदाचार के प्रचारक-भ्रष्टाचार के विरोधी

भारत के गृहमन्त्री, आर्य सभ्यता के पोषक, दृढ़ निश्चयी श्री गुलजारीलाल नन्दा —

"स्वामी दयानन्द जी उन महापुरुषों तथा महान् आत्माओं में से थे, जिन्होंने अपने विचार और प्रचार द्वारा विश्व के लोगों को अन्धकार से निकालने की कोशिश की। यही कारण है कि स्वामी जी का प्रभाव जितना उनके जीवन काल में लोगों पर पड़ा, उससे दस हजार गुणा अधिक उनके निर्वाण के पश्चात् हुआ। स्वामीजी ने वेदों का प्रचार किया, ताकि लोग अपने आपको समझ सकें कि उनका कर्तव्य क्या है। यदि लोगों में वैदिक प्रचार होता तो वे सैकड़ों वर्षों तक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गैरों की गुलामी में कदापि न रहते और उन दिनों जो दुर्दशा भारत के लोगों की हुई, वह न हुई होती। स्वामीजी जानते थे कि जब तक समाज उन्नति नहीं करेगा, तब तक देश भी उन्नति नहीं कर सकता। उस समय हम अन्धकार में फँसे हुए थे।

".....मुझे विश्वास है कि स्वामी दयानन्द के बताए हुए, सिद्धान्तों का पालन करने से ही, भ्रष्टाचार और अन्य सामाजिक कुरीतियाँ दूर होंगी। हमें लोगों को सदाचारी बनाना है। यदि लोग स्वामी दयानन्द के आदर्शों का पालन करें तो वे स्वतः सदाचारी बन जाएँगे। देश में जो भ्रष्टाचार व्याप्त है और खाने पीने की वस्तुओं में मिलावट तथा अन्य सामाजिक कुरीतियाँ हैं, समाप्त हो जाएँगीं और एक नये भारत का निर्माण प्रारम्भ होगा।"

वर्तमान भारत के सर्वप्रथम निर्माता

महान् विचारक, अनेक ग्रन्थों के लेखक, स्वतन्त्र पक्ष के उपाध्यक्ष, भूतपूर्व उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री के० एम० मुन्शी—

"स्वामी दयानन्द सरस्वती वर्तमान भारत के सर्वप्रथम महान् निर्माता थे। उन की विद्या प्रगाढ थी, और चरित्र महान् था। इन सबसे बढ़ कर उनकी दृष्टि उस दृष्टि से कहीं अधिक स्वच्छ और विशाल थी जो साधारणतः राष्ट्र-निर्माताओं को प्राप्त रहती है। आज के सुधरे हुए हिन्दू धर्म में, हिन्दू महासभा मनोवृत्ति की प्रबलता से और महात्मा गांधी की कार्य प्रणाली में हम स्वामीजी की निर्भ्रान्त दृष्टि और राजनीतिज्ञता के प्रभाव को देख सकते हैं। निःसन्देह उनकी स्मृति भावी भारत की वंशौती को समृद्ध करती रहेगी।"

प्रतिभा के धनी

वर्तमान केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री त्रिगुणसेन के अभिमत से—

"महर्षि दयानन्द अलौकिक शक्ति, विद्वत्ता और प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में सुधार करने का जो महान् कार्य किया है, वह अविस्मरणीय है। **(केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री)**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राष्ट्र के पितामह

भारतीय लोक सभा के अध्यक्ष, दक्षिण भारत के लोकप्रिय नेता, आर्य सभ्यता के पुजारी, विद्वान्, वक्ता एवं लेखक श्री अनन्तशयनम् आयंगर—

"गाँधीजी राष्ट्र के 'पिता' थे तो महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के 'पितामह' थे महर्षिजी हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के और स्वाधीनता आन्दोलन के आद्य-प्रवर्त्तक थे। गाँधी जी उन्हीं के पद चिह्नों पर चले।

यदि महर्षि दयानन्द हमें मार्ग न दिखाते, तो अंग्रेजी शासन में उस समय सारा पंजाब मुसलमान बन जाता और सारा बंगाल ईसाई हो जाता। महर्षिजी ने सारे विश्व को 'आर्य' बनाने की प्रेरणा दी।

.....महर्षि स्वामी दयानन्द ने यह सिद्ध कर दिया कि जगत् की सब संस्कृतियों में सब से अच्छी संस्कृति आर्यों की संस्कृति है। उन्होंने देश के सामने एक आदर्श रखा।

.....महर्षि दयानन्द दिव्य महापुरुष थे। उन्होंने इसाई मत और इस्लाम के हमलों से देश की रक्षा की। आर्यसमाज देश की एकता के लिए कार्य कर रहा है।"

महान्पुरुष

जगजीवन राम (केन्द्रीय खाद्य तथा कृषि मन्त्री)

महर्षि दयानन्द एक महान् पुरुष थे जो सामाजिक विषमता, रूढ़ि-ऊँच-नीच और छुआ-छूत जैसे कलंक का उन्मूलन करने के लिए आजीवन संघर्षरत रहे। समाज ऐसे महापुरुषों के प्रति सदा ऋणी रहेगा। ऐसे महापुरुषों द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर और उनके आदर्शों, उपदेशों, और सन्देशों को जीवन में अवतरित कर ही समाज उन्नत हो सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नवयुग के निर्माता शेरसिंह

(शिक्षा राज्य मन्त्री)

"यह बात प्रायः सभी प्रमुख सामाजिक इतिहासकार मानते हैं कि हमारे इस नवयुग के निर्माण में महर्षि दयानन्द ने एक बड़ी ही महत्व-पूर्ण भूमिका निभाई थी। धार्मिक नवजागरण और सामाजिक-चेतना का शंखनाद तो उन्होंने भारत के तत्कालीन ह्रासोमुख समाज के लिए बताया ही था, साथ ही हिन्दी जैसी अखिल भारतीय भाषा को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर उन्होंने देश को एक नई दिशा प्रदान की है। संस्कृत भाषा के नवोद्धार के लिए भी उन्होंने अथक प्रयास किया था और उनकी प्रेरणा से अनेक कार्य-क्षेत्रों की स्थापना हुई।

इन्हीं कारणों से हमारे सांस्कृतिक नवजागरण में महर्षि दयानन्द का एक अतुलनीय स्थान है। समाज में हुए अनेक सुधारों का और परिवर्तनों का श्रेय युगों तक उनको दिया जाता रहेगा।

मार्ग प्रशस्त कर्त्ता भक्त दर्शन

(उपमन्त्री परिवहन भारत सरकार)

दीपावली पर महर्षि दयानन्द जी की स्मृति में पुष्पांजलि अर्पित करना अनिवार्य है। उन्होंने दीपावली की तरह ही अंधेरे में हमारे देश को प्रकाश दिखाया था। हम सब आज भी उससे अपने मार्ग को प्रशस्त देखते हैं।

समानता के मार्गदर्शक रामसुभगसिंह

(संचार तथा संसदीय कार्य मन्त्री)

ऋषि दयानन्द ने ज्ञान, समाज-सुधार और नव जागरण के जो दीप जलाए उनके कारण हर दीपावली पर देश उन्हें श्रद्धा के साथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

याद करता है। महर्षि का जीवन हर अंधेरे और संकट में मार्ग-दर्शन कर सकता है। वैज्ञानिक और सामाजिक जीवन के जो आदर्श दयानन्द जी ने प्रतिपादित किए उनसे राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीय एकता, मानवीय समानता आदि वर्तमान सभी समस्याओं के हल हमें सहज ही मिल सकते हैं।"

राजकीय उत्थान के महान् गुरु

महाराष्ट्र के वयोवृद्ध कर्मठ, हिन्दूत्व अभिमानी नेता, पंजाब के राज्यपाल श्री एम० वी० गाडगील :—

महाराष्ट्र में जो स्थान छत्रपति शिवाजी अथवा समर्थ गुरु रामदास का है, वही स्थान भारत के राजकीय उत्थान में महर्षि दयानन्द का है।"

स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा

स्वतन्त्र भारत के भूतपूर्व रक्षा मन्त्री, डॉ० कैलाशनाथ काटजू—

"स्वामी दयानन्द ने सर्व प्रथम भारत की स्वतन्त्रता का बीज बोया था। भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में सर्व प्रथम उन का नाम लिखा जाएगा।"

प्राचीन संस्कृति के प्रचारक

स्वतन्त्र भारत के भूतपूर्व शिक्षामन्त्री--डॉ० एल० श्रीमाली:—

"आर्यसमाज ने बहुत बड़ी सेवा की है--हमारे समाज में। जो देश का पुनः निर्माण हो रहा था, देश में नव जागृति हो रही थी, जो हमारा समाज हमारी संस्कृति को भूल गया था, उस समय स्वामी दयानन्दजी ने सच्चा मार्ग दिखाया और याद दिलाया कि यह हमारी पुरानी संस्कृति है, उच्च संस्कृति के योग्य है, उन्हें भूल नहीं जाना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिए, उन्हें कायम रखने से ही हमारा देश, हमारा समाज जीवित रह सकता है और उनके प्रयत्नों से फिर उनके साथियों और उनके अनुयायियों से सबसे बड़ा काम यह हुआ, देश में जगह-जगह शिक्षण संस्थाएं खुली। मेरा ख्याल है कि इन संस्थाओं ने देश की बहुत बड़ी सेवा की।"

एक ही समाज के पक्षपाती

स्वतन्त्र भारत के वर्तमान उप विदेश मन्त्री श्री दिनेशसिंह जी—

"महर्षि दयानन्द हमारे बीच में ऐसे समय में आये जब हम अपने प्राचीन विचारों एवं आदर्शों को भूल कर अन्धकार में टटोल रहे थे। उन्होंने प्रकाश दिया, सच्चा मार्ग बताया। स्वामी दयानन्द बहुत बड़े विद्वान् थे। स्वामीजी ने हमें जीवन दिया। उन्होंने वेदों के प्रचार से विश्व को जागृत किया और भारत में एकता की नींव को दृढ़ किया। जाति-पांति को समाप्त कर दिया। स्वामीजी विश्व में एक ही समाज की स्थापना के पक्ष में थे। उन्होंने शिक्षा दी कि हम किस प्रकार अपने ऊपर विश्वास रखते हुए अपने बल पर भारत की प्राचीन संस्कृति के आदर्शों को फिर से स्थापित कर सकते हैं। देश में जागरण आया और अनेकों को नया सहारा मिला।"

राष्ट्र विधाता

कांग्रेस अध्यक्ष तथा भूतपूर्व सौराष्ट्र के मन्त्री, तथा वर्तमान खादी बोर्ड के प्रमुख श्री ढेबर :—

"राष्ट्र विधाता महर्षि दयानन्द ने प्राचीन संस्कृति की आधार-शिला पर नव भारत का सृजन किया है। उनका अमर व्यक्तित्व अपने को प्रेरणा दे रहा है। उन का पुरुषार्थ अमर था और वे आज भी हम में अथाह उत्साह पैदा कर रहे हैं। साधन और साध्य को महर्षि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द ने अपने प्रकाण्ड पुरुषार्थ से एक कर दिया था। इस महापुरुष ने अपने जीवन में माँ भारती की शील रक्षा के अतिरिक्त और कुछ नहीं विचारा। भारत को उन्होंने नव जीवन और आत्म विश्वास से भर दिया था। हिन्दू धर्म में जो संकीर्णता की भावना व्याप्त थी, उस को दूर करने में उन्होंने अपने जीवन की बाजी लगा दी थी, और देश की जनता में वीरत्व और जीवित रहने की भावना की लहर पैदा कर दी थी। उस पूज्य विभूनि महर्षि दयानन्द के चरणों में मेरा सादर वन्दन हो।"

सर्व प्रथम स्वतन्त्रता का वृक्ष लगाने वाले

स्वतन्त्र भारत के भूतपूर्व रक्षा मन्त्री, महान् क्रान्तिकारी नेता, मानवता का पुजारी, वास्तव में सच्चे त्यागी श्री महावीर त्यागः=

"मैंने आर्यसमाज का कार्य किया। उन दिनों मैं आर्य समाज के उत्सवों में बड़े उत्साह ते भाग लेता था--व्याख्यान देता था। मैं आर्य समाज के प्रभाव के कारण ही काँग्रेस में आया। मुझे इस बात को स्वीकार करने में तनिक भी संकोच नहीं कि स्वामी दयानन्द जी ने ही भारत की स्वतन्त्रता का वृक्ष लगाया, महात्मा गाँधी ने उसे सींच कर बड़ा किया।"

.....आर्यसमाज एक आन्दोलन है जो विश्व को एक परिवार के रूप में समझता है। आर्यसमाजियों को स्वामी दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए जोर-शोर से कार्य करना चाहिये, इसी में विश्व का कल्याण होगा।

चेतना के प्रतीक सेठ गोविन्द दास

(संसद सदस्य)

"स्वामी दयानन्द भारतीय सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक थे, उन्होंने सुप्त राष्ट्र में नव चेतना और नव-जागरण का संचार किया। ऐसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महापुरुष की राष्ट्र चिर ऋणी है, दीपावली के इस पावन पर्व पर हम सब महर्षि दयानन्द ने जीवन और उनके चरित से प्रेरणा लें, यही उसके प्रति हमारी पावन श्रद्धांजलि होगी तथा यही उनके इस स्मृति दिवस का सन्देश भी है।"

स्वराज्य का रहस्य 'सत्यार्थप्रकाश' में पाया

स्वतन्त्र पक्ष के अध्यक्ष, प्रगतिशील विचारक, लोकसभा के प्रभावशाली वक्ता, आन्ध्र के लोक प्रिय नेता श्री प्रो० रंगा जी—

"मुझे कारावास में महर्षि दयानन्द लिखित 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा मैंने 'स्वराज्य' का रहस्य 'सत्यार्थप्रकाश' में पाया। यदि हमारी यह प्राचीन जाति 'सत्यार्थप्रकाश' की शिक्षाओं के अनुसार चले तो इस पृथ्वी की कोई शक्ति हमारी स्वाधीनता को नहीं मिटा सकती। 'सत्यार्थप्रकाश' हमें आन्तरिक स्वराज्य प्राप्त करने की शिक्षा देता है और वह तपस्या, संयम या एक शब्द में 'ब्रह्मचर्य' के द्वारा प्राप्त होता है। एक बार जहाँ आन्तरिक 'स्वराज्य' मिला बाह्य साम्राज्य अपने आप सुरक्षित रहेगा।

.....स्वामी दयानन्द सरस्वती! क्या यह एक साधारण परिव्राजक सन्यासी का नाम है? क्या कारण है कि हिन्दुस्तान के करोड़ों पुरुष उनकी पूजा करते हैं, यद्यपि यह आत्मा दिवंगत हो चुकी है। ऋषि ने कौन-सा अपूर्व काम किया? उसकी पूजा करने से क्या लाभ? यह प्रश्न उस अनजान विदेशी यात्री के अन्दर उठेंगे जो संसार में भ्रमण करता हुआ इस आर्य भूमि में पदार्पण करेगा। मेरा उत्तर यह है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती किसी परिव्राजक का नाम नहीं है, अपितु वह एक "शक्तिमान विचार" का प्रतीक है। स्वामी दयानन्द की पूजा की जाती है क्योंकि उसकी पूजा करना सत्य की पूजा करना है, वेदों की पूजा करना है, भूतकाल में और भूत के द्वारा वर्तमान में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीना है तथा न केवल भारत के अपितु मनुष्य जाति के भविष्य के लिये वर्तमान को ऊँचा उठाना है। ऋषि को समझने का अर्थ यह है कि किस प्रकार मनुष्य सर्वोत्तम रीति से अपने देश की नहीं, मनुष्य जाति की सेवा के लिये उपयुक्त बना सकता है।

जिस धर्म का स्वामी दयानन्द ने प्रचार किया वह कोई नया मत नहीं है अपितु वह उतना ही पुराना है, जितनी कि बर्फ से ढकी हुई चोटियाँ। यह वह धर्म नहीं है जो कि केवल आदर्शों को बताता है, अपितु उनका धर्म आदर्शों को क्रियात्मक रूप में चरितार्थ करना सिखाता है, आप उन आदर्शों के सौंदर्य को अपने क्रियात्मक जीवन में अनुभव कर सकते हैं। जड़वादी लोग स्वामी दयानन्द को केवल आदर्शवादी के रूप में भले ही समझें पर मैं तो उन्हें क्रियात्मक आदर्श-वादी समझता हूँ। क्योंकि उनका रात्रि का स्वप्न दिन की सच्चाई है। भारतवर्ष तू उन आदर्शों का स्वप्न देख, एक बार उस ऋषि के सुन्दर विचारों का स्वप्न देख और उनमें मग्न हो जा, तब तू अपने को शक्तिशाली, बलवान, अजेय राष्ट्र बना सकेगा।"

शक्ति शाली दयानन्द

नियोजन पंच के उपाध्यक्ष, तपस्वी विद्वान् विचार श्री अशोक महता—

"जिनको यह देख कर आश्चर्य होता है कि किस तरह एक विजयी गुजरात ने इतने शक्तिशाली व्यक्ति सरदार पटेल को जन्म दिया, उनको यह याद रखना चाहिए कि दयानन्द सरस्वती जी भी गुजराती थे। सरदार पटेल भी उस चट्ठान की तरह का आत्म विश्वास और प्रशान्त साहस का एक भाग पा गये हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाजी संस्कारों ने मुझे समाज सेवी बनाया

स्वतन्त्र भारत की स्वास्थ्य मन्त्राणी, महान् तपस्विनी स्त्री कार्य कर्त्री समाज सेविका डॉ० सुशीला नैयर--

"शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज का ऐतिहासिक योगदान रहा है। आर्यसमाज जैसी स्वयम् सेवी संस्था इस (पर्वतीय क्षेत्र की शिक्षा समस्या पर) कार्य में भी हमारी सहायक है और सरकार उसे पूर्ण सहयोगी देगी।"

.....मेरे बचपन के आर्यसमाजी संस्कार ही थे, जिन्होंने मुझे बापू के सेवा मिशन में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी। आज की शिक्षा में नैतिक मूल्यों के पुनः स्थापन की अत्यन्त आवश्यकता है। आर्य-समाज इस सम्बन्ध में प्रर्याप्त कार्य कर रही है। राष्ट्र के लिये यह शुभ है।

लुप्त वैभव को प्राप्त कराने वाले

भारत के महान् विचारक महाराष्ट्र आदि अन्य प्रांतों के सफल राज्यपाल श्री श्रीप्रकाश—

"भारत के सामाजिक इतिहास में स्वामी दयानन्द का मुख्य स्थान है। वह ऐसे महा पुरुष थे जिस ने हमारी हीन-पतित दशा में से उठाने का मार्ग बताने आए थे। उनकी कामना, हमारे लुप्त वैभव को पुनः प्राप्त करने की थी।"

मातृभूमि को आत्म निर्भर करने वाले

महाराष्ट्र के वयोवृद्ध तपस्वी नेता हिन्दुत्व अभिमान, तथा लोक सभा के सदस्य श्री माधव० एस० अणे—

"ब्रिटिश शासन काल में मातृभूमि भारत की आत्म निर्भरता के लिये तथा उन की सन्तानों को धार्मिक और देश भक्त बनाने के लिये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्व प्रथम प्रयत्न और महत्व का आदेश महर्षि दयानन्द का मुख्य जीवन कार्य था।"

संस्कृति के प्रसारक !

भारतीय संस्कृति के प्रसार, सामाजिक सेवा व शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि जी के योगदान ने उन्हें इतिहास में अमरत्व प्रदान कर दिया है। राष्ट्रीय चेतना व नैतिक उत्थान के लिए जो पथ उन्होंने दिखाया है उस पर चलकर ही हम आगे बढ़ सकते हैं और यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाँजलि है।.....

रामचन्द्र विकल

(वन मन्त्री, उत्तर प्रदेश) संस्कृति के प्रसारक

ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण

राजा अवधेशसिंह बहादुर—

"भारत की दीन हीन दशा पर दीनानाथ को दया आई और उन्होंने ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण का प्रादुर्भाव किया और 'आर्यसमाज' की स्थापना की। आर्यसमाज महर्षि की प्रतिध्वनि बिना विशेष नहीं है।"

मनुष्यों के हृदय सम्राट्

राष्ट्रीय जागरण के कार्य में श्रीमती रामेश्वरी नेहरू को महान् स्थान प्राप्त है।

"महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में लिखना कठिन कार्य है, क्योंकि मैं समझती हूँ कि मैं इस विषय पर अधिकार पूर्वक नहीं लिख सकती। मैं तो इन महान् व्यक्ति के कार्यों के प्रति अपनी विनम्र और आदर पूर्ण श्रद्धाञ्जलि ही प्रस्तुत कर सकती हूँ। जिनका यद्यपि वे संन्यासी थे और जिन के पास कोई भौतिक सम्पति न थी अपने जीवन काल में और मृत्यु के अनेक वर्षों के बाद अब भी असंख्य नर-नारियों के हृदयों पर शासन रहा। वस्तुतः वे मनुष्यों के हृदय सम्राट थे। मेरे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन्म से पूर्व ही वे अमर पद को प्राप्त हो गये थे, फिर भी उन की भावना, वातावरण में रमी हुई थी। अपने बचपन में मुझे इस वातावरण में रमी हुई थी। अपने बचपन में मुझे इस वातावरण की अनुभूति हुई बावजूद इसके कि मेरा जन्म एक सनातनी ब्राह्मण परिवार में हुआ। उन की शिक्षाओं और उनके महान् व्यक्तित्व का प्रभाव इतना गहरा और व्यापक था कि उस से कोई अछूता न रह सका। मैंने अपने बचपन में उनके सम्बन्ध में अनेक कहानियां सुनी थीं कि वह बहुत बड़े आदमी हैं, बड़े शक्तिशाली हैं, बड़े विद्वान् हैं, बड़े बलवान् हैं और उनके व्यक्तित्व में जादू भरा है। उन्होंने सोते हुए हिन्दुओं को किस प्रकार जगाया और किस प्रकार अन्ध विश्वास के गग्ढे में से निकाला, उन में किन प्रकार देश से प्रेम करना सिखाया, इन विषयों की कहानिया सुन-सुन कर मुझे रोमांच हो जाता था। सहस्रों व्यक्ति उस झण्डे के नीचे आ खड़े हो गये और अन्त में उन के अनुयायियों की उत्साह से भरी सेना बन कर तैयार हो गई। जिस ने समस्त हिन्दू समाज में मुख्यतः पंजाब में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। उन्होंने जीवन का कोई पार्श्व न छोड़ा। धर्म, स्वच्छता, स्वास्थ्य, भोजन ये सब उन के उत्साही अनुयायियों के कार्य - कलाप के अङ्ग रहे। महर्षि दयानन्द के कतिपय श्रेष्ठतम अनुयायियों के वैयक्तियों के वैयक्तिक सम्पर्क के कतिपय श्रेष्ठतम अनुयायिों के वैयक्तिक सम्पर्क में आने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जो आग, लाला लाजपतराय स्वामी दयानन्द, महात्मा हंसराज तथा अन्यों के हृदय में काम करती थी, वह स्वामी दयानन्द जी द्वारा ही प्रज्वलित की गई थी। इतिहास से ऋषि दयानन्द न केवल धार्मिक सुधारक के ही रूप में अपितु भारतीय जागृति के एक महान् स्तम्भ के रूप में स्थान पायेंगे।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृत भाषा के प्रचारक

केन्द्रीय राज्य शिक्षा मन्त्री श्री रामचप्प मार्तण्ड राजरनलीस जी

"इस गुरुकुल में संस्कृत का अध्ययन देख कर मेरा चित्त प्रसन्न हुआ। विश्व की प्रथम, देवताओं की यह की यह भाषा मनुष्यों की भी आदि वाणी बनी। हमारे पूर्वज कवियों ने इसी संस्कृत विद्या से विज्ञान क्षेत्र में बहुत उन्नति की थी और उस से मानव जाति का उपकार किया था। विदेशों में विज्ञान की आंखें बन्द थी, तब के दर्शन उपनिषद् सहित वैदिक साहित्य का अवगाहन करके इस देश के मनीषियों ने विज्ञान का विस्तार कर दिया था, किन्तु दुर्भाग्यवश यह हमारा राष्ट्र दासता को स्वीकार करके संस्कृत सरस्वती को भी सुखा बैठा। परन्तु वे विद्वान् धन्य हैं, जिन्होंने ऐसी विषय स्थिति में भी इस संस्कृत निधि को अपने कण्ठ कोष में रख कर रक्षा की। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस विषय में देश की उन्नति को ध्यान में रख कर बहुत प्रयास किया।"

गुरु के निष्ठावान् शिष्य

स्वतन्त्र भारत के गृह मन्त्रालय के मन्त्री श्री बी० एन० दातार—

"स्वामी दयानन्दजी ने जिस अदम्य उत्साह, अथक परिश्रम, अनवरत लग्न और अधिक निष्ठा से गुरु के आदेश का पालन किया। देश की वर्तमान कठिन परिस्थितियों में आज उससे भी अधिक निष्ठा उत्साह और लग्न की आवश्यकता है।"

क्रान्तिकारी व्यक्तित्व

राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया

महर्षि दयानन्द एक क्रान्तिकारी व्यक्तित्व के महापुरुष थे जो सड़वाद और आंख विश्वास के स्थान पर वेदों पर आधारित एक ऐसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धार्मिक आस्था का प्रादुर्भाव करना चहते थे जिसमें प्रत्येक अपनी बुद्धि और सूझ-बूझ के सहारे अपने जीवन का सर्वोच्च लक्ष प्राप्त कर सके। वे धार्मिक जीवन में समता और सहिष्णुता के महान् उपासक थे हमारे आज राष्ट्रीय जीवन में इस समता और सहिषुणता की अत्यन्त आवश्यक हैं।"

कर्म योगि

उपराष्ट्रकवि श्री वी वी गिरि

अब समय आ गया है जब कि भारत के लोगों को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों और संदेशों पर पूरी तरह से अमल करके मानव मात्र में सद्भावना का प्रसार करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द "कर्म योगि" थे। उन्होंने सारे विश्व के कल्याण के लिए कार्य किया।

आर्य समाज निश्चित ही भाईचारे और शान्ति की उन भावनाओं के प्रसार में योग देगा। जिस से विश्वशान्ति को प्रोत्साहन मिलेगा।

हिन्दू जाति पर उपकार

राज्यमन्त्री संघरात तथा संसद कार्य भारत-श्री इन्द्रकुमार गुजरात।

"महर्षि दयानन्द के हिन्दू जाति पर जो उपकार हैं, उनसे उऋण होना मुश्किल है। भारत युग-युग से ज्ञान का आराधक रहा है; परन्तु पिछली शताब्दी में धर्मरूढ़ि, अज्ञानता पर मुखापेक्षीय और सामाजिक कुरीतियों द्वारा फैलाए हुए अंधकार में यह आराधना आच्छादित थी। इस व्याप्त अंधकार के ताश के लिए ही महर्षि दयानन्द जी ने दीपक जलाया था। मैं चाहूँगा कि दीपक हमारी उन राष्ट्रीय बुराइयों का समूल नाश करे।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शक्ति–सुत

महान् दार्शनिक सन्त, आर्यसभ्यता के प्रतीक समा, साधु टी० एल० वास्वानी—

"मेरे निर्बल शब्द ऋषि की महत्ता का वर्णन करने में अशक्त हैं। ऋषि के अप्रतिम ब्रह्मचर्य, सत्य संग्राम और घोर तपश्चर्या के लिए अपने हृदय के पूज्य भावों से प्रेरित होकर मैं उनकी वन्दना करता हूँ। मैं ऋषि को शक्ति-सुत अर्थात् कर्मवीर योद्धा समझकर उनका आदर करता हूँ। उनका जीवन राष्ट्र निर्माण के लिए स्फूर्ति दायक, बलदायक और माननीय है।

दयानन्द उत्कट देश भक्त थे, अतः मैं राष्ट्रवीर समझकर उनकी वन्दना करता हूँ।"

बड़े समाज संस्कर्ता

हिन्दी के यशस्वी लेखक, श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी जी

स्वामिनं तमहं वन्दे

"सनातन धर्मावलम्बिलों की सन्तति होने और देवी देवताओं के सम्मुख सिर झुकाने पर भी मेरे हृदय में श्री स्वामी दयानन्दजी सरस्वती पर अगाध श्रद्धा है। वे बहुत बड़े समाज-संस्कर्ता वेदों, के बहुत बड़े ज्ञाता तथा समयानुकूल भाष्यकर्ता और आर्य्य संस्कृति के बहुत बड़े पुरस्कर्ता थे। उन्होंने जिस समाज की संस्थापना की उससे भी अपने देश, अपने धर्म और अपनी भाषा को बहुत लाभ पहुँच रहा है। मैं स्वामीजी की विद्वत्ता और उनके कार्यकलाप को अभागे भारत के सौभाग्य का सूचक-चिह्न समझता हूँ। उनका चित्र चिरकाल तक मेरे नेत्रों के सामने रह कर मेरी आत्मा को बल का तथा मेरे बैठने के कमरे की शोभा का दान देता रहा है।

धन्यश्च प्राज्ञमूर्धन्यं दयानन्दं दयाधनम्।
स्वामिनं तमहं वन्दे वारं वारञ्च सादरम्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्व के मित्र

मुसलमानों के माने हुए विद्वान् नेता मौलाना जहूर वख्श—

"ऋषि दयानन्द विश्वामित्र अर्थात् विश्व के मित्र थे। उनका प्रेम सार्वभौम था, उनके हृदय में सब के लिए समान प्रेम था।..... ऋषि दयानन्द ने कब और कहां अन्य धर्मों पर घृणात्मक दृष्टि की है—मुझे तो इसका पता नहीं चलता। उसने यह तो कहीं नहीं कहा कि अमुक धर्म बुरा और घृणा योग्य है, अतः उस धर्म के अनुयायी उसे मानना छोड़ दें। उसने "सत्यार्थ प्रकाश" में अन्य धर्म-सम्बन्धी, जिन ग्रन्थों की आलोचना की है, वह उसके विचार स्वातन्त्र्य का सुन्दर उदाहरण है। विचार स्वातन्त्र्य से घबराना कोरी कायरता है। यदि ऋषि ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वतन्त्र आलोचना की है तो पुण्य-कार्य ही किया है। अन्य विचार वाली को उस पर स्थिर चित्त से विचार करना चाहिए। यदि ऋषि द्वारा बतलाये गये दोष ठीक जंचे तो प्रसन्नता-पूर्वक अपने धर्म का संस्कार करें। इस से तो उन्नति ही होगी। 'ऋषि के हृदय में विश्व-प्रेम की विमल धारा प्रवाहित हो रही थी। 'वसुधैव कुटुम्ब' उसकी प्रधान नीति थी।'

भले ही उस समय देश पर उसके सन्देश का विशेष प्रभाव न पड़ा हो, पर आज उसके सन्देश का मूर्तिमान स्वरूप दिखाई दे रहा है। स्वराज्य का स्वर ऊँचा हो रहा है, समाज का संस्कार किया जा रहा जा रहा है और धर्म की बुराइयां दूर की जा रही हैं। इस सबका श्रेय स्वामी दयानन्द को है।

समानता का उपदेशकर्ता

भारत की प्रसिद्ध स्त्री-नेता श्रीमती सरलादेवी चौधरानी—

"स्वामी दयानन्द भारत वर्ष के उन धार्मिक महा पुरुषों में से एक हैं, जिनका गुणानुवान करने में ही जीवन समाप्त हो सकता है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्होंने मन, वचन और कर्म की स्वतन्त्रता का सन्देश दिया तथा मानव मात्र की समानता का उपदेश दिया। वह अपने जीवन और मृत्यु में महान् ही रहे।

भारतीय एकता के प्रतीक

बंगाल के प्रसिद्ध नेता स्वर्गीय बाबू देवेन्द्रनाथ मुकरजी—

"महर्षि दयानन्द भारतीय एकता के प्रतीक थे। उन्होंने मूर्तिपूजा का खण्डन किया। हिन्दू जाति के रोगों का निदान, उन जैसा सुन्दर और सचोट अन्य किसी सुधारक ने नहीं किया है।"

भारत का उत्थान करने वाले

सर यदुनाथ सरकार—

"जब भारत के उत्थान का इतिहास लिखा जाएगा तो नंगे फकीर दयानन्द सरस्वती को उच्चासन पर बिठाया जाएगा।

.....आर्यसमाज एक वास्तविकता है, जिस से जन साधारण का आश्चर्य जनक उत्थान हुआ है।"

जिन्होंने जहर देने वाले को क्षमा दी

श्री विजय राघवाचार्यजी—

"स्वामी दयानन्दजी ने वर्तमान काल में हिन्दू धर्म की जो सेवा की है, वैसी किसी ने नहीं की है। देश को इस के लिए गौरव लेना चाहिए। जहर देने वाले को उन्होंने न सिर्फ क्षमा किया, परन्तु उसे मुकदमे तथा सजा से भी छुड़ाया।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महान् सुधारक आर्यसमाज के स्थापक

महान् विचारक, श्री डां० सर० पी० सी० राय—

"महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने अपने देश की जो सेवा की है उसकी मैं हार्दिक प्रशंसा करता हूँ। एकेश्वरवाद का वह समर्थक है और क्रियात्मक रूप में जाति बन्धन को तोड़ा है। जाति बन्धन को तोड़ा है मैं जाति बन्धन को भारतीय राष्ट्रनिर्माण के कार्यो में घोर शाप भयानक बाधा के रूप में देखता हूँ। आर्यसमाज ने अस्पृश्यों (अछूतों) के प्रति अपनी सहायता बढ़ाई है और समाज में मिलाकर उन्हें अपनाया है। इनके नेताओं में कार्य की धगश है, अपने उद्देश्यों के लिए उन्होंने महान् आत्म त्याग किया है। मुझे डी० ए० वी० कालेज में जाने, सब वर्गों और कालेज सम्बन्धी छात्रालयों को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। शिक्षकों की निष्ठा, उद्देश्य और कार्य कुशलता का मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। आर्यसमाज ने अपने कार्य-क्रम में स्त्री शिक्षण को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया है। आर्यसमाज ने अपनी मातृभूमि के उद्धार के लिए बहुत किया है इस-लिए वह हमारी चिर कृतज्ञता के पात्र है।"

एकता सम्पादक

'इण्डिया एक वर्ल्ड' (कलकत्ता) के माने हुए सम्पादक श्री डां० कालीदास नाग—

"राममोहन और दयानन्द आज भी जीवित हैं। हमारे इतिहास के इन महान् एकता सम्पादकों के प्रति हमारी श्रद्धांजलि सादर समर्पित है। हमारे रोगी समाज की चिकित्सा का उन्होंने जो महान् प्रयत्न किया वह भुलाया नहीं जा सकता।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विदेशी दासता के मुक्ति–दाता

'माडर्न रिव्यू' के सम्पादक प्रसिद्ध साहित्यकार के विचार—

"स्वामी दयानन्द सरस्वती, राष्ट्रीयता, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से भारत का एकीकरण चाहते थे। भारतवासियों को राष्ट्रीयता के सूत्र में ग्रन्थित करने के लिये उन्होंने देश को विदेशी दासता से मुक्त करना आवश्यक समझा था।

.....आर्यसमाज धार्मिक शक्ति के रूप में समाज सुधार के लिये कार्य कर रहा है। भारत के राष्ट्रीय जीवन में यह बात अत्यन्त महत्व की है जिसे भविष्य में भुलाया न जा सकेगा।"

हिन्दू समाज के पुनरुत्थान नेकती

श्री तारकनाथदास एम० ए० पी० एच० डी० म्यूनिच—

"ऋषि दयानन्द ने हिन्दू समाज के पुनरुत्थान में इतना अधिक हाथ बटाया है कि उन्हें १९ वीं शताब्दि का प्रमुखतम हिन्दू समझा जायगा।"

सत्यार्थप्रकाश स्वामी दयानन्द का ज्ञान कोष है

मद्रास से प्रकाशित होने वाले 'हिन्दू' व 'स्वदेशमित्र' के प्रसिद्ध सम्पादक श्री ए० रंगा स्वामी आर्यंगर एम० एल० ए०—

"सत्यार्थ प्रकाश" स्वामी दयानन्द का ज्ञान कोष है। इसमें वैदिक धर्म का सर्वथा क्रियात्मक स्वरूप वर्णित है यह दक्षिण भारत में प्रचलित विभिन्न मतवादों और धार्मिक विश्वासों के कारण वहां अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निष्पक्ष धार्मिक विचारों के आदर्श

बंगाल के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री पो० रमेशचन्द्र बनर्जी —

"संसार में जितने धर्म-ग्रंथ हैं, उनमें केवल 'सत्यार्थप्रकाश' ही ऐसी पुस्तक है, जिसने सभी धर्म-मतों की निष्पक्ष आलोचना और सच्चे धर्म की मीमांसा है। सत्यप्रेमीधर्म सुधारक खुले तौर से तुलनात्मक धर्म विचार करते और सब मतमातान्तरों से सत्य का ही ग्रहण करते हैं।

.....ऋषि दयानन्द ने अपने 'सत्यार्थप्रकाश' में एक ओर तो युक्ति प्रमाणों से वैदिक सिद्धान्त की स्थापना की और दूसरी ओर विविध मत मतान्तरों की न्यायपूर्ण युक्ति समीक्षा भी की। तुलनात्मक और निष्पक्ष धार्मिक विचार का आदर्श ही स्वामी दयानन्द थे।

'सत्यार्थप्रकाश' से जो लोग चिढ़ते हैं और इसके लिए आर्यसमाज को कोसते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि यह युग तुलनात्मक विचार का ही है। 'सत्यार्थप्रकाश' संसार का दिग्दर्शक यन्त्र है।"

धर्म द्रष्टा

प्रसिद्ध गांधी विचारक श्री जमनालाल बजाज—

"भारतवर्ष के आधुनिक इतिहास में स्वामी दयानन्द सरस्वती का स्थान अद्वितीय है। जब स्वामी जी ने अपने मत का प्रचार आरम्भ किया, तब सनातनी पण्डित तथा धर्माचार्यों ने उनका घोर विरोध किया था। सनातनी पण्डित की दृष्टि में स्वामीजी हिन्दू धर्म को रसातल में पहुंचाने वाले एक बड़े भारी नास्तिक थे। स्वामीजी का मूर्ति पूजा विरोध, विधवा विवाह का समर्थन, जाति भेद का निषेध आदि कई बातों से आर्य समाज तथा स्वामीजी के सम्बन्ध में साधारण जनसमाज में भी इसी तरह का ख्याल हो गया था। आज जमाना बदल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया है। हिन्दू जनता आर्यसमाज के कुछ सिद्धान्तों को न मानते हुए भी आज उनको अन्य धर्मियों से आक्रमणों से हिन्दू धर्म तथा समाज की रक्षा करने वाले एक प्रबल एवं प्रभावशाली संगठन के रूप में गौरवपूर्ण दृष्टि से देखने लगी है। स्वामी दयानन्द धर्म द्रष्टा थे। जो बात उन्हें ६० [१९३३ में] साल पहले दिखाई देती थी, उन्हें लोग अब ठीक समझने लगे हैं।"

मेरे आदरणीय गुरुदेव

स्वतन्त्रता संग्राम के तपस्वी सेनानी हिन्दी के महान् लेखक, देश विदेश में वैदिक विचारधारा के प्रचारक, निडर व्याख्यातास्वामी सत्यदेव परिव्राजक—

"महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की छोटी सी जीवनी मैंने बाल्य काल में पढ़ी थी। उसने मेरे बाल हृदय परग हरी छाप डाल दी। मैंने उसे पढ़कर अपने उस परम आदरणीय गुरुदेव के पद चिह्नों पर चलने का निश्चय कर लिया। जब मेरे विवाह का समय आया तो उन समय मेरी आयु सोलह वर्ष की थी। मैंने पिताजी से साफ कह दिया कि मैं विवाह नहीं करूँगा। इन्कार करने पर घर में कुरुक्षेत्र खड़ा हो गया। श्री स्वामीजी की जीवनी के प्रभाव ने मेरे जीवन में क्रान्ति कर दी और मैंने घर से निकलने की योजना बना ली।

यह उसी योजना का परिणाम है कि मैं आज अपनी इस बहत्तर (७२) वर्ष की आयु में अपनी गुफा में बैठा हुआ अपने देश की स्वाधीनता का रूप देख रहा हूँ और अपने पिछले जीवन का सिंहावलोकन कर रहा हूँ। मुझे जो कुछ मिला है, वह ऋषिजी की कृपा का फल है, जिसके कारण मैंने कई बार पृथ्वीप्रदक्षिणा कर नवीन अनुभव प्राप्त किये। कैसा संग्राम मुझे अपने जीवन में करना पड़ा है और स्वामीजी के आदर्शों पर चलने के लिये कैसे कैसे भीषण युद्ध करने पड़ हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज उनका स्मरण कर बड़ी श्रद्धा से स्वामीजी को वन्दना करता हूँ।"

स्वराज्य का मार्ग बताने वाले

भारत की सर्वोच्च अदालत सुप्रीमकोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश कश्मीर राज्य के मुख्य मंत्री, महान् विचारक एवं सिद्ध हस्त लेखक श्री डा० मेहरचन्द जी महाजन महर्षिजी को निम्न शब्दों में अपनी श्रद्धांजलि दी है –

"एक समय देश में अनेक देवी देवताओं की पूजा धूब चल निकली थी, उस समय जो महर्षि दयानन्द पैदा न होते तो देश की दूसरी ही दशा होती। सारा पंजाब तो मुसलमान व ईसाई बन गया होता। परन्तु युग विधाता महर्षि दयानन्द ने इस प्रभाव से सारे देश को बचा लिया।"

·····उन्होंने हमें स्वराज्य का मार्ग बताया और सच्ची राष्ट्रीयता प्राप्त करने के लिये आह्वान किया और राष्ट्रीय एकता के लिये हिन्दी भाषा का प्रचार किया। अस्पृश्यता को मिटाया और अछूतपन के कलंक से पीड़ित अपने करोड़ों देश बन्धुओं को अपने गले लगाया। स्त्री और शूद्रादि को वेद पढ़ने का अधिकार है—यह भी सिद्ध कर दिखाया। स्त्रियों को ऊपर उठाया, उन को समान अधिकार दिला कर शिक्षणालय का मार्ग बताया। वैदिक संस्कृति का सच्चा स्वरूप समझा कर बताया कि स्त्रियां तो अपनी सिरताज और शोभा हैं। महर्षि ने कहा कि परदेशी शिक्षण को छोड़ कर देशी शिक्षण प्राप्त करो। और अपने गुरुकुल व विद्यालय खोलने का आदेश दिया। संक्षेप में कहूँ तो महर्षि ने कुछ भी बाकी छोड़ा नहीं। उन्होंने कहा कि जो हिन्दू, ईसाई, मुसलमान बन सकता है तो, ईसाई-मुसलमान भी हिन्दू बन सकते हैं। उन के लिये उन्होंने शुद्धि की संजीवनी-बूटी संसार के सामने रक्खी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन के पीछे गाँधी जी हुए, जिन्होंने महर्षि दयानन्द का कार्य पूरा किया – देश स्वतन्त्र हुआ। आर्य समाज के बच्चे-बच्चे ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया। १८५७ से १९४७ तक महर्षि दयानन्द और उन के अनुयाइयों ने न केवल स्वतन्त्रता की लड़ाई में ही भाग लिया, वरन् नेतृत्व भी किया है। जिस में अनेको को फांसी हुई। और आजन्म काले पानी की सजा पाकर नारकीय यातनाएं सहनी पड़ी।

नैपोलियन और सिकन्दर से भी महान्

खदीजा बेगम एम० ए० ने महर्षि जी को निम्न शब्दों में नैपोलियन तथा सिकन्दर से महान् बताया है--

"महर्षि दयानन्द भारत माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से थे, जिनका नाम संसार के इतिहास में सदैव चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत माता के सपूतों में से हैं, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाए – थोड़ा है। नैपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट् एवं विजेता संसार में हो चुके हैं, परन्तु स्वामी दयानन्द उन सबसे बढ़ कर थे।"

जहर पीकर अमृत पिलाने वाले

जहर के महान् साहित्यकार, राष्ट्रकवि श्री जवेरचन्द मेघाणी--

"जगत के रोष, तिरस्कार और विद्वेष का जहर पीते-पीते बदले में उस योगीवर ने अपने आत्म मंथन में से अमृत मथ कर हमें दिया है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक 'नमस्ते' जयघोष के प्रचारक

फकीरे दयानन्द, आर्यन फलोसफर, राजरत्न, महान् दार्शनिक पण्डित महात्मा आत्मा रामजी अमृतसरी—

"महर्षि दयानन्दजी को धन्य है कि उन्होंने समाज का नाम दयानन्दी समाज नहीं रक्खा, किन्तु आर्यसमाज रक्खा। धन्य है, उस ऋषि को जिसने वैदिक 'नमस्ते' के जयघोष प्रचार करने का स्वप्न तक भी नहीं देखा।"

सब मजहबों को लाभ हुआ

मुस्लिम नेता श्री पीर अहमद मुनिश—

"स्वामी दयानन्दजी ने भारत के लिए जो अमूल्य कार्य किया है, उससे हिन्दू कोम के साथ मुसलमान तथा अन्य दूसरे मजहब वालों को भी सीधा अथवा अन्य ढंग से लाभ हुआ। भारत के राष्ट्र निर्माण के कार्य में स्वामी दयानन्द के कार्यों ने बहुत ही महत्व का कार्य किया है। भारतीय उत्थान में आर्यसमाज का बड़ा हाथ है। पश्चिमी सभ्यता के हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी के सिर बांधने का सौभाग्य प्राप्त है तो स्वामी दयानन्द की ओर इशारा किया जा सकता है।"

मानव मात्र को मुक्ति दिलाने वाले

डा० के० पी० जायस्वाल—

"महर्षि दयानन्द १९ वीं शताब्दि के महान् भारतीय ही नहीं थे, मानव मात्र को मुक्ति दिलाने वाले आधुनिक महान् व्यक्तियों में उनका ऊँचा स्थान था।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यत्व के आदर्श

पंजाब के प्रसिद्ध लोकप्रिय हिन्दू नेता, शिक्षाशास्त्री समाज सेवी श्री सर गोकुलचन्द नारंग—

"स्वामी दयानन्द सरस्वती हिन्द के महान् विभूतियों में से एक थे। उन जैसे कार्य करने वालों में वे सब से महान् थे। वैदिक काल के आर्यत्व का वे आदर्श थे। शरीर, बुद्धि और नैतिक दृष्टि से वे एक महात्मा थे। समझुच आश्चर्यकारक बात तो यह है कि इस समय की चल रही स्वदेशी प्रवृतियों, दलितोद्धार, नात-जात की विशालता आदि के सर्वप्रथम विचारक स्वामीजी थे।"

पद् दलित भारत के पुनरुत्थानकर्ता

अफ्रिका में आर्य संस्कृति के महान् देशभक्त क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी भवानी दयालजी हैं—

"स्वतन्त्र भारत में आर्यसमाज के प्रचार का क्षेत्र विस्तृत हुआ है, और उसकी जबाबदारी भी बढ़ी है। इस समय आवश्यकता है नात-जात बन्धन तोड़ कर राष्ट्रीय एकता साधने की। इसके सिवाय भारत की आजादी का रक्षण नहीं हो सकेगा।

महर्षि दयानन्द ने पद्यलित भारत का पुनरुत्थान किया और राष्ट्र को नव जीवन का सन्देश दिया। उन्होंने महान् सामाजिक क्रांति के अन्ध श्रद्धा दूर करने के लिये प्रयत्न किया और राष्ट्र का निर्माण किया।"

सर्व धर्म तत्वों के समन्वयकर्ता

गुजरात के प्रसिद्ध विक्षा शास्त्री एवं उपन्यासकार श्री रमणलाल देसाई की श्रद्धाञ्जलि—

जिस क्षण तुम्हारी देह दुर्बल प्रतीत हो, उस क्षण एक महान् प्रचडकाय गुजराती को याद करना। जिस क्षण तुम्हारे मन में शिथि-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लता·कायरता का प्रवेश हो, उसी क्षण सजीवन उत्साही एक तेज-देश भक्त गुजराती का स्मरण करना। जिस क्षण तुम्हारे हृदय में मोह और विलास का साम्राज्य छा जाय उस क्षण धन को ठुकराने वाले एक नैष्ठिक गुर्जर ब्रह्मचारी की ओर दृष्टिपात करना। अपमान से पीड़ित होकर जिस क्षण तुम्हारी आँखें ऊपर न उठ सकें, उस समय एक हिमालय सम अचल और उन्नत गुजराती के ओजस पूर्ण मुख को कल्पना में चित्रित करना। वैर, विद्वेष से जलते हुए विरोधी को क्षमा दान देने में संकोच हो उस क्षण विषपान कराने वाले को क्षमा दान देने में संकोच हो उस क्षण विषपान कराने वाले एक राग द्वेष से विरक्त गुर्जर संन्यासी को याद करना। वह महान् गुजराती महान् हिन्दुओं में अग्रस्थान में सुशोभित है।

.....कोई भी कभी यह मानने में भूल न कर बैठे कि स्वामी दयानन्द पर-धर्म विरोधी थे। सब से जबरदस्त उन्होंने मोर्चा लिया था, तो वह स्वधर्मियों से, स्वधर्म के पण्डित, शास्त्री, साधु संन्यासी सब से, आर्य धर्म की अवमानता करने वाले अन्ध श्रद्धावान्, प्रज्ञान हिन्दू समाज से। अनेक मुस्लिम उन के मित्र थे। आज की धर्म उदारता को भी चकित करने वाली उदारता उस युग में स्वामीजी ने केसरी दरबार में बताई थी। सर्व धर्म तत्वों का समन्वय करने के लिये, दिल्ली में होने वाले धर्म दरबार में भी वे पधारे थे। मेडम ब्लेवेटस्की, कर्नल आल्कोट, महादेव गोविन्द रानाडे, केशवचन्द्र सेन, देवेन्द्रनाथ टागोर, सर सैयद अहमद खां, नवाब नवाजसी अली खां, हिन्द के आद्य समाजवादी श्यामजी कृष्ण वर्मा के अतिरिक्त अनेक नाम उन के मित्रों तथा प्रशंसकों की पंक्ति में रखे जा सकते हैं और ऊपर लिखित एक भी नाम आर्यसमाजी का नहीं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नारी समाज के उत्कर्ष के प्रवर्तक

अछूतोद्धारक, अनाथों के नाथ, विधवाओं और अबलाओं के रक्षक, प्रसिद्ध स्त्रीशिक्षण के हिमायती, आर्य कन्यामहाविद्यालय के जन्म दाता, देश भक्त, हिन्दुत्व अभिमानी, युवकों की प्रेरणा शक्ति, कर्मयोगी पण्डित आनन्दप्रिय जी

"पश्चिमी संस्कृति ने नारी को सम्मान तो अवश्य दिया, पर उसे अपने ड्राइंग रूम की शोभा बना दिया। यदि पौर्वात्यों ने नारी को दास बनाया तो पाश्चात्यों ने नारी को डोली [गुड़िया] बना डाला। इन संघर्षों के बीच में महर्षि दयानन्द जी का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने वेद कालीन नारी के आदर्श को समाज के सामने रख, नारी समाज का ही नहीं, अपितु समूचे समाज का नव निर्माण कर डाला।

महर्षि ने जब एक तीन वर्ष की बालिका को नमन किया, तो उसका अर्थ मात्र यह था कि नारी समाज की निर्मात्री है, वह हर अवस्था में पूजा के योग्य है। नारी का रूप न भोगवाद का है ना ही वह दासी है, और ना ही वह समाज का आकर्षक खिलौना है, महर्षि की कल्पना की नारी, समाज की प्रेरणा दायिनी है, जो समाज के नैतिकस्तर को टिका रखने वाली है आर्यसमाज ने महर्षि के चरण चिन्हों पर चल कर जो महान् कार्य किया वह था नारी को अपने प्रतिष्ठा पूर्ण पद पर पुनः स्थापित करना। महर्षिजी ने कहा कि नारी ऋषिका है, समाज की भाग्य विधात्री है। घर की निर्मात्री है उसे सन्तुष्ट एवं उच्च स्थान पर आसीन रखने से ही समूचा समाज ऊँचा उठ सकता है। आज महर्षि दयानन्द का नाम और काम केवल यदि उन्हें नारी समाज के उत्कर्ष के प्रवर्तक के रूप में ही देखें तो अमर रहेगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मालिक से मिलाने वाले

मुस्लिम नेता श्री वाजद अली

"हे मालिक ! निरर्थक रूढ़ियों में से हम मुक्ति पाएं—यह आपको स्वीकार न था ? हे ईश्वर ! हम आपसी मत भेद दूर करें। यह आपको अच्छा नहीं लगता था ? हम आपसे दूर चले जा रहे थे। दयानन्द हमें आप से मिलना चाहते थे।"

युगद्दष्टा तथा दूरद्दष्टा

दीवान बहादुर कृष्णलाल जवेरी—

"महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज स्थापित करके मात्र मूर्ति पूजा के सामने मोर्चा नहीं लिया था। स्वामी जी "युगद्दष्टा" तथा 'दूर-द्दष्टा थे।'

जिन्हें स्वराज्य का श्रेय प्राप्त है

राष्ट्रीय आन्दोलन में राष्ट्रीय भावना के कार्य करने वाले मुस्लिम नेता मौलाना हजरत मुहानी ने आर्यसमाज का स्वाधीनता संग्राम में सबसे अधिक हाथ था यह स्वीकार करते हुए कहा—

"ग्रसरार युग से भी पूर्व ९० प्रतिशत आर्यसमाजी स्वराज्य के आन्दोलन में सक्रिय रूप में भाग लेते थे। तब अन्य संस्थाओं में से मुश्किल से दो तीन प्रतिशत सदस्य भाग लेते थे। सबसे पहले आर्य-समाज के सदस्य ही स्वराज्य के मैदान में उतरे थे और अपने नेता बने थे। आज भी जब अन्य लोग स्वराज्य के आन्दोलन में अधिक भाग ले रहे हैं तब आर्यसमाजी सदस्यों की शक्ति सब से अधिक है। इसका श्रेय स्वामी दयानन्द को प्राप्त है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक साम्यवाद के प्रचारक

आर्षत्व के प्रतीक समा, अनेक खोजपूर्ण ग्रन्थों को संसार के सामने लाने वाले, संस्कृत भाषा के विद्वान, त्यागी, तपस्वी, सौम्यमूर्ति, स्वामी श्री ब्रह्ममुनि परिव्राजक–

'वर्तमान साम्यवाद, ईर्ष्या प्रधान है। वह गाड़ी में चलने वाले को टांग से नीचे खींच कर पैदल चलने वालों के साथ चलाना चाहता है। मनुष्य को अवनति की ओर ले जाना चाहता है, परन्तु महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित 'आर्यसमाज' का अर्थात् 'वैदिक साम्यवाद' नीचे चलने वालों को हाथ पकड़ कर गाड़ी में चलने वालों के साथ बिठाना चाहता है, मनुष्य को उन्नति की ओर ले जाना चाहता है। महर्षि दयानन्द के दिए गए आदेश-"अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु दूसरे की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए"—से स्पष्ट है।

महान् देशभक्त

सिक्खों के राष्ट्रवादी नेता एवं लोक सभा के सदस्य श्री ज्ञानीगुरु मुखसिंह मुसाफिर—

"महर्षि दयानन्द की देश भक्ति और निर्भीकता की सराहना करता हूँ। आज देश के संकट को दूर करने के लिये भी स्वामी जी की शिक्षाओं की जरूरत है।"

समाज कल्याण के पथ प्रदर्शक

आचार्य जुगलकिशोर जी—

"महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित 'आर्यसमाज' अपनी अनेक संस्थाओं द्वारा समाज की विविध प्रकार से सेवा कर रही है। जिसमें खास करके कल्याण का मुख्य विषय है—जो प्रशंसनीय है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महाप्रतिभा मंडित महापुरुष

महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला जी—

"उन्नीसवीं सदी का परार्द्ध भारत के इतिहास का अपर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर इस समय, इस पुण्य भूमि में अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्हीं में एक महा प्रतिभा-मंडित महा पुरुष हैं।

.....शासन बदला, अंग्रेज आए, संसार की सभ्यता एक नये प्रवाह से वही, बड़े-बड़े पण्डित, विश्व-साहित्य, विश्व-ज्ञान, विश्व-मैत्री की आवाज उठाने लगे, पर भारत उसी प्रकार पौराणिक रूप के माया-जाल में भूल रहा। इस समय ज्ञान स्पर्धा के लिये समय को फिर आवश्यकता हुई, और महर्षि दयानन्द का यही अपराजित प्रकाश है। वह अपार वैदिक-ज्ञान राशि के आधार-स्तम्भ स्वरूप अकेले बड़े बड़े पण्डितों का सामना करते हैं। एक ही आधार से इतनी बड़ी शक्ति का स्फुरण होता है कि आज भारत के युगान्तर साहित्य में इसी की सत्ता प्रथम है, यही जन-संख्या में बढ़ी हुई है।

चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शिष्टता आदि में जो आदर्श महर्षि दयानन्दजी महाराज में प्राप्त होते हैं, उनका लेसमात्र भी अभारतीय पश्चिमी शिक्षा 'संभूत नहीं, पुनः ऐसे आर्य में ज्ञान तथा कर्म का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वयं इसके उदाहरण हैं, मतलब यह कि जो लोग कहते हैं कि वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उन्नतमना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा होता है। महर्षि दयानन्दजी सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खण्डन हैं। महर्षि दयानन्दजी से बढ़कर भी मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता, यहीं वैदिक ज्ञान की मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है, यहीं आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है।.....हमें अपने सुधार के लिये क्या-क्या करना चाहिए, हमारे सामाजिक उन्नयन में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहां-कहां और क्या-क्या रुकावटें हैं हमें मुक्ति के लिये कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए, महर्षि दयानन्दजी सरस्वती ने बहुत अच्छी तरह समझाया है। आर्यसमाज की प्रतिष्ठा उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। देश में महिलाओं, पतितों तथा ब्रह्मणेतर जातियों के लिये महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज से बढ़कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया। आज जो जागरण भारत में देख पड़ता है, इसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्यसमाज को है। स्वधर्म में दीक्षित करने का यहाँ इसी समाज से श्री गणेश हुआ है। भिन्न जाति वाले बन्धुओं को उठाने तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का उद्यम आर्यसमाज ही करता रहा हैं। शहर-शहर, जिले-जिले, कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण, आर्यसमाज की स्थापना हो गई। राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी स्वामीजी एक प्रवर्त्तक हैं, और आर्य-समाज के प्रचारक की तो यह भाषा ही रही है।.....शिक्षण के लिये गुरुकुल जैसी संस्थाएँ निर्मित हो गई। एक नया ही जीवन देश में ही लहराने लगा। हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिये हम गर्व करते हैं तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष में नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित कर दिया।"

किशोरी दास वाजपेयी

(सुप्रसिद्ध हिन्दी विद्वान्) अस्पृश्यता उन्मूलक—

"जिसने अमावस्या के घोर अन्धकार को अपने प्राकट्य से छिन्न-भिन्न करके एक बार पूर्णिमा के दर्शन करा दिए उस शक्ति के बारे में मेरा मत क्या भिन्न होगा ? इस देश की प्रबुद्ध जनता जानती है कि आर्य समाज में जो कुछ दिखाई देता है, उसके प्राणवान् उत्स स्वामी दयानन्द सरस्वती हैं। समाज-सुधार, स्त्री-शिक्षा, अस्पृश्यता-उन्मूलन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदि का श्री-गणेश, स्वामी जी ने ही किया था, और यह सच है कि उनके दिखाये मार्ग पर ही आगे के नेता चलकर यशस्वी हुए।"

हिन्दुओं की बाइबिल 'सत्यार्थप्रकाश' के रचयिता

दक्षिण भारत के प्रसिद्ध, राष्ट्रवादी नेता श्री सी० एस० रङ्गा ऐयर एम० ए० ने महर्षि द्वारा लिखित सत्यार्थप्रकाश की प्रकाश-स्तम्भ लिखते हुए लिखा है—

"आर्यसमाजी वेदों के सच्चे अनुयायी हैं। अमेरिकन लेखिका (मिस मेयो) उनके कार्यों व उनकी लोकप्रियता को नहीं जान सकती। उसने अभी हाल में प्रकाशित उस तुलनात्मक विवेचन की पुस्तक का भी अवलोकन नहीं किया है,जो कि आज दिन शिक्षित-अशिक्षित और नगरवासी व ग्रामीण प्रत्येक हिन्दू की दृष्टि में बाइबिल की तरह पूजनीय बन गई है वह है ऋषि दयानन्द का 'सत्यार्थप्रकाश'।

कारागार की छड़ों के पीछे एक वर्ष तक 'सत्यार्थप्रकाश' मेरा मित्र, प्रकाश स्तम्भ और जीवन बना रहा। सत्यार्थप्रकाश में वेद का तत्व है। इसके महत्व को कम करने का अर्थ है कि वेदों के बहुमूल्य सार की प्रतिष्ठा तथा मूल्य को कम किया जाये।"

देशोद्धार के सर्वप्रथम प्रचारक

राजस्थान में शाहपुरा स्टेट के महाराजा सर नाहरसिंहजी वर्मा महर्षि के परम भक्तों में से थे। आपने महर्षि के चरणों में रह कर स्वदेश प्रेम की शिक्षा लेकर अपना पवित्र जीवन बनाया था। आपके विचार यहाँ दे रहे हैं—

"देशोद्धार का नाम सर्वप्रथम मैंने स्वामी दयानन्दजी के मुख से सुना। वे बड़े देश प्रेमी थे। भारतवर्ष की पतित अवस्था देखकर आप बड़े दुःखी होते थे, और रात दिन देश के उद्धार की तड़फ मे रहते थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपने मुझे देशहित के अन्य मार्गों के साथ-साथ स्वदेशी का रास्ता भी बताया था। स्वदेशी से देश का उद्योग विकास करे, विद्या और धन बढ़ता है।"

दलितों के उद्धारक

वर्तमान युग के वेदों के विद्वान् अनेक ग्रंथों के लेखक वेदमूर्ति पण्डित श्रीपाद, दा० सातवलेकरजी—

"स्वराज्य की कल्पना से कई वर्ष पूर्व स्वामी दयानन्द ने वेद धर्म का प्रचार शुरू किया था।... भारत में दलित जाति को ऊँचा उठाने वाली कोई संस्था है तो वह आर्यसमाज ही है। मैंने भारत भर का भ्रमण किया है, मैंने स्थान-स्थान पर देखा है कि जहां-जहां आर्यसमाज का प्रचार है, वहां-वहां दलित जाति उन्नति कर रही है।"

गांधीजी से पूर्व स्वराज्य को संदेश देने वाले

प्रसिद्ध देशभक्त नेता डा० पट्टाभि सीतारमैया—

"गांधीजी से पूर्व महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के लिये महान् कार्य किया। उन्होंने भारतीयों को 'स्वराज्य' का मार्ग बताया। ऋषि एक पूर्ण पूरुष थे। भारत के युग निर्माता थे।"

हिन्दू धर्म का नवीन दृष्टि देने वाले

मौलाना अब्दुल बारी—

"स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म को हमारे सामने ऐसे ढंग से रखा कि हम उन पर बुद्धिपूर्वक गौरव कर सकते हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत के उज्ज्वल नक्षत्र

दक्षिण के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री प्रोफेसर एम० रंगाचारी—

"स्वामी दयानन्द भारत के विख्यात पुरुषों में एक उज्ज्वल नक्षत्र थे।"

नवीन युग के पथ प्रदर्शक

तिर्वा नरेश लेफ्टीनेण्ट राजा दुर्गानारायणसिंह जी बहादुर—

"सचमुच श्री स्वामी जी उस नवीन युग के पथ-प्रदर्शकों में से एक हैं और गणना में यदि उन्हें सर्वोच्च स्थान दें तो लेशमात्र भी अतिशयोक्ति न होगी। यदि वे लोग जिन के हाथों में 'आर्यसमाज' की नौका का पतवार है, ईमानदारी, सच्चाई और परिश्रम से कार्य करेंगे, तो इसमें सन्देह नहीं कि बेड़ा पार हो जाएगा और ऋषि की आत्मा तृप्त होगी तथा भारतवर्ष का निश्चिय ही कल्याण होगा।"

हिन्दी भाषा के प्रथम कट्टर प्रचारक

हिन्दी के हिमायती, लेखक, वक्ता, प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री श्री प्रो० अयोध्यानाथजी शर्मा—

"समाज के किसी हितैषी ने श्री महाराज (महर्षि जी) से सत्यार्थप्रकाश का किसी दूसरी भाषा में अनुवाद करने की आज्ञा चाही और कहा कि इससे आपके सिद्धान्तों का अधिक प्रचार होगा। ऋषि ने उत्तर दिया कि 'यदि कोई व्यक्ति' 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ना चाहता है और वास्तव में उसके पढ़ने के लिए उत्सुक है तो उसे हिन्दी में पढ़ना चाहिए और यदि हिन्दी न जानता हो तो उसे सीख ले। इस उत्तर को जितनी बार दोहराया जाए और इसका जितना आदर किया जाए थोड़ा है।

'स्वामी जी और उनके आर्य समाज द्वारा हिन्दी का भारी उपकार हुआ है। गुरुकुलों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी है।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एकता के सूत्रधार

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध देशभक्त नेता श्री नरसिंह चिन्तामणि केलकर—

"स्वामी दयानन्द पर संकीर्णता का दोष लगाना भ्रमात्मक और मिथ्या है।.....उनकी शिक्षाओं का प्रमुख लक्ष्य एकता रहा और इस्लाम का आतंक, हिन्दुओं को जाति की अपेक्षा करके संगठित होने में बहुत सहायक सिद्ध हुआ। उनके प्रयत्नों से आर्य या हिन्दू एक जाति और वेदों का आदर्श पारस्परिक एक सूत्रता के साधन बन गए।"

पथ प्रदर्शक जीवन

महाराजा तेजसिंह वर्मा—

"जब तक सूर्य और चन्द्र भूमण्डल पर प्रकाशमान हैं, तब तक ऋषि दयानन्द का जीवन भी मनुष्य जीवन के लिए पथ दर्शक बना रहेगा।"

स्वर्ग सुख

पंजाब के महान् शिक्षा शास्त्री सन्त, त्याग तथा तप की मूर्ति महात्मा हंससज—

"महर्षि दयानन्द का जीवन महान् योगमय जीवन था। ये राष्ट्र में प्राचीन आर्य गौरव को स्थापित करके, जगत् गुरु बनाना चाहते थे। मेरे जीवन पर महर्षि के जीवन का बहुत प्रभाव पड़ा। मैंने उनके मिशन का कार्य करने में जीवन साफल्य समझा। जिस गुरुदेव के कार्य को मैंने अपने हाथों में लिया है उसके करने में मुझे स्वर्ग का सुख प्राप्त होता हैं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्यार्थप्रकाश पढ़ें

श्री सत्यमूर्ति एम० एल० ए०—

"मैं अपनी जनता को महर्षि दयानन्द के महान् ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने का परामर्श दूँगा। यह उन्हें सुदों की महती और स्थाई सत्यता का ज्ञान देगा। उन्होंने स्त्रियों के अधिकारों का जैसा पक्ष ग्रहण किया है, वैसा प्रगतिशील समर्थन संसार में कही नहीं मिलेगा।

सर्वप्रथम सुधारक

शिवगढ़ के महाराजा महेशप्रताप तारायणसिंह जी—

"एक सनातन धर्मी होने के नाते मैं स्वामी दयानन्द को वर्तमान भारत का सर्व प्रथम सुधारक मानता हूँ। स्वामी जी महाराज ने मृत्यु पर्यन्त हिन्दू जाति को उठाया और प्राचीन आदर्श बताकर सत्य की ओर प्रवृत्त किया। इस लिए हमें स्वामी जी का ऋणी रहना चाहिए।"

एक शुद्ध ईश्वरवाद के सफल प्रचारक

दिल्ली के प्रसिद्ध सेंट स्डीफिस कॉलेज के प्रिंसिपल श्री एस० के० रुद्र—

इसका श्रेय केवल स्वामी दयानन्द को ही है कि हिन्दू लोग आधी शत्ताब्दि में ही रुढ़िवाद और पौराणिक देवी देवताओं की पूजा छोड़ कर एक अत्यन्त शुद्ध ईश्वरवाद को मानने लगे हैं।

प्राणिमात्र के उद्धारक

स्वाधीनता संग्राम में शहीद होने वाले अनजान क्रान्तिकारी वीरों की स्मृति में साहित्य रचकर श्राद्ध करने वाले, प्रसिद्ध पत्रकार एवं संसद सदस्य श्री बनारसी दास चतुर्वेदी—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"महर्षि दयानन्द का ध्येय मनुष्य ही नहीं, प्राणिमात्र का उद्धार करना था।"

वेदों के पठन पाठन के प्रचारक

आंनरेबल राजा सर मोती चन्द्र जी—

महर्षि दयानन्द ने हिन्दू जाति को पतन से बचाया : लोगों की आँखें खोली। वेदों का पठन पाठन शुरू कराया। संस्कृत तथा हिन्दी भाषा का प्रचार बढ़ा। प्राचीन संस्कारों को लोग समझने लगे। हिन्दुओं में आर्यत्व आया। यह प्रकाश दयानन्द रूपी सूर्य ने दिया है।'

महान् क्रान्तिकारी

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी, लोकप्रिय नेता, समाजवाद के सच्चे पुजारी मजदूरों के मन के मोती संसद सदस्य श्री इदुलाल याज्ञिक—

"महर्षि दयानन्द महान् क्रान्तिकारी थे, उन्होंने महान् क्रान्ति पैदा करके राष्ट्र को जगाया। महर्षि दयानन्द का मैं पूजक हूँ।"

सर्वप्रथम हिन्दू संगठन कर्त्ता

राजा नरेन्द्रनाथ एम० एल० सी०—

"हिन्दू संगठन कार्य करने वालों में स्वामी दयानन्द सरस्वती को बहुत ऊँचा स्थान मिलना चाहिए। संगठन की बात सर्व प्रथम उन्होंने बताई थी।"

धार्मिक व सामाजिक विद्रोह के झन्डाधारी

मुस्लिम नेता तथा दिल्ली नगर निगम के मेयरनूरुद्दीन अहमद

"महर्षि दयानन्द ने गुलामी के युग में धार्मिक व सामाजिक विद्रोह का झण्ढा खड़ा कर अपूर्व साहस का परिचय दिया।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सच्ची देश-निष्ठा की मूर्ति

महर्षि दयानन्द के समकालीन उनके परम भ शिक्षा शास्त्री विद्वान् जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे

"महर्षि दयानन्द में धार्मिक उत्साह भरा हुआ था। उसमें वीरोचित कर्मण्यता की भावना विद्यमान थी, जिसकी उत्पत्ति इस विश्वास से हुई थी कि कोई उच्च सत्ता मेरे कार्य का संरक्षण कर रही है। समय की आवश्यकताओं को देखने की उन्हें जो सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त थी वह अलभ्य थी उसमें लक्ष्य की सिद्धि की दृढ़ता ऐसी अटूट थी कि कोई भी विपत्ति वा प्रतिकूलता उसे झुका न सकती थी। उन जैसी तत्परता और साधन-सम्पन्नता विरलों को ही प्राप्त होती है। उनकी सच्ची देशनिष्ठा समय से कहीं आगे बढ़ी हुई थी। दया से द्रवित उनकी न्याय भावना देखते ही बनती थी। यही सब गुण और विशेषताएँ उनकी शक्ति का स्रोत था जिन्होंने उन्हें आर्यसमाज जैसे महान् आन्दोलन को संचालित करने में समर्थ बनाया था।"

ज्योति स्वरूप निराकार के उपासक

महर्षि समकालीन मुस्लिम नेता, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक सर सय्यद अहमदखां ने महर्षि दयानन्दजी के ३० अक्टूबर सन् १८८३ को बलिदान के ठीक छः दिन पश्चात् ६ नवम्बर सन् १८८३ के अलीगढ़ इन्स्टीट्यूट मैगजीन में निम्न शब्दों में अपनी श्रद्धाञ्जली दी थी—

"निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहब ने जो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्कृत के बड़े आलम 'विद्वान्' और वेदों के बहुत मुहक्किक [समर्थक] थे। ३० अक्टूबर ७ बजे शाम को अजमेर में इन्तकाल किया। इलावा इल्मो फजल [उत्तम विद्या के अतिरिक्त] निहायत नेक और दरवेश सिफ्त [साधु स्वभाव] आदमी थे। इनके मोहतकिद [अनुयायी] इनको देवता मानते थे, और बेशक वे इसी लायक थे। वे सिर्फ ज्योति स्वरूप निराकार के सिवाय दूसरे की पूजा को जायज [विहित] नहीं रखते थे। हम से स्वामी दयानन्द मरहूम [स्वर्गीय] से बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा इनका निहायत अदब [आदर] करते थे कि हरेक मजहब वाले को इनका अदब लाजिमी [आवश्यक] था। बहरहाल ऐसे शख्य थे जिनका मसाल [उपमा] इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है और हर एक शख्स को उनकी वफात [मृत्यु] का गम [शोक] करना लाजमी है कि ऐसे बेनजीर शख्स [अनुपम मनुष्य] इनके दरमियान से जाता रहा।"

धार्मिक एकता के प्रतीक

महर्षि दयानन्द के समकालीन मुस्लिम शिक्षाविज्ञ स्वर्गीय इमदाद हुसैन

"इस वक्त स्वामीजी साहब की तस्वीर मेरे जेरे निगाह है। मेरी दृष्टि के समक्ष है। मैं ख्याल करता हूं कि ५० साल से अधिक वक्त हुआ कि आप (श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती) दुर्गाकुण्ड बनारस में एक बाग में कयाम फरमाते थे। इस वक्त आपकी बजै [वेष] यह थी कि लंगोट बांधते थे। और तमाम बदन खुला रहता था। कुर्सी पर बैठते थे और जो लोग आपकी मुलाकात को आते थे वे भी कुर्सी पर बैठते थे। निहायत तन्दुरुस्त थे और खुश मिजाज थें। दो एक शख्श लिखे पढ़े करीब फर्श पर बैठे रहते थे। जो कुछ फरमाते थे वह लोग लिखा करते थे तअस्सुब मजहबी [धार्मिक पक्षपात] बिल्कुल न था। एक लोहे के चूल्हे पर कुछ पकता रहता था। आप कुर्सी से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उठकर देख लिया करते थे मेरा तालिब इल्मी [विद्यार्थी] का जमाना था। जयनारायण कांलेज में पढ़ता था। कालेज बन्द होने पर मैं रोज जनाब [श्रीमान्] की खिदमत [सेवा] में जाया करता था। रोज की हाजरी का यह असर हो गया था कि आप मुझ जैसे तालिबे इल्म (विद्यार्थी) का इन्तजार फरमाते थे और जब आते हुए सामने से देखते थे, खुश होकर फरमाते थे "आओ बैठो" जहां तक मुझको याद है तअस्सुबाना मजहब [धार्मिक एकता] की तरफ इशारा किया करते थे।

महान् दीप्तिमान् देशभक्त

महर्षि दयानन्द समकालीन रायसाहिब लींतारामजी के अपने संस्मरण।

"सन् १८७५ ई० में मुझे लखनऊ में नार्मल स्कूल के विशाल हाल में जो उस समय अमीनुद्दौला की कोठी में स्थापित था, स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

मुझे ऐसा लगा कि स्वामीजी के भीतर कोई महान् आत्मा बोल रही है। मुझे स्वामीजी महाराज एक देशभक्त से भी अधिक ऊँचे जान पड़े जिनका जीवनोद्देश्य छल-कपट और अन्ध-विश्वास की जंजीरों को काट देना है। मेरे हृदय में उनके मुख से अधिकाधिक सुनने की इच्छा जाग्रत हुई।

१८७९ में बनारस के सुन्दर आनन्द बाग में मुझे स्वामीजी के साथ साक्षात् वार्तालाप का अलभ्य अवसर प्राप्त हुआ। तत्कालीन जिलाधीश ने मुझे संस्कृत के उन विज्ञापनों का अँग्रेज़ी में अनुवाद करने का कार्य सौंपा जो महर्षि दयानन्द और उनके विरोधियों के द्वारा प्रचारित किए गये थ। उनको पढ़कर जिलाधीश महोदय ने मुझे कहा कि 'स्वामी दयानन्द का विरोध करना व्यर्थ है।' स्वामीजी की विद्वत्ता अगाध थी और बनारस की समस्त विद्या उनके समक्ष भाप बनकर हवा में उड़ गई थी। उनके साथ वार्तालाप करने पर मेरे ऊपर यह सँस्कार पड़ा कि वे अपने विश्वास में बहुत दृढ़ परन्तु शान्त थे। अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लम्बे जीवन में मुझे उन जैसा सच्चा एवं दृढ़ विचारों वाला व्यक्ति नहीं मिला। जिस समय मैंने उनसे भेंट की थी उस समय वे कुछ लिख रहे थे। मैंने पूछा 'क्या आप ऋग्वेद का भाष्य लिख रहे हैं।' उन्होंने कहा —'नहीं, मैं सँस्कृत व्याकरण पर एक पुस्तक माला तैय्यार कर रहा हूं।'

१९ वीं शती में जितने देशभक्त और समाज-सुधारक उत्पन्न किए हैं उनके सौर्यमण्डल में स्वामीजी महाराज सबसे अधिक दीप्तिमान् थे। उन अकेले ने देश के सामाजिक, नैतिक और बौद्धिक उत्थान के लिए जो कार्य किया है उनकी तुलना में समस्त सुधारकों का सम्मिलित कार्य भी नगण्य था।

अपूर्व वेदज्ञ

महर्षि के समकालीन महा महोपाध्याय, राय बहादुर डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा—

"सन् १८८१ ई० दिसम्बर से १८८२ ई० के मई मास तक बम्बई में महर्षि के अनेक व्याख्यान सुनने का मेरे चित्त पर अत्यन्त प्रभाव पड़ा महर्षि दयानन्द सरस्वती आदरणीय महापुरुष, आदर्श विद्वान्, अपूर्व वेदज्ञ, निर्भीक, धर्म प्रवर्तक, सच्चे समाज सुधारक, आर्य सँस्कृति के सर्व श्रेष्ठ पुरुषकर्त्ता और विश्व प्रेमी थे।"

प्रकांड पण्डित और व्याकरण विज्ञेषज्ञ

महर्षि का साक्षात्कार करने वाले श्री जी० एस० खापर्डे

"महान् स्वामी के जीवन-काल में बम्बई में मुझे उन को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था मैंने उन के व्याख्यान सुने थे और निज वार्तालाप में उन के सम्बन्ध में विचार विनिमय भी किया था। उन के फोटो और चित्र जो स्थान-स्थान पर मुझे दिखाई पड़ते हैं वे स्वाभाविक से ही हैं, परन्तु वे उन के नेत्रों की भव्य चमक उत्पन्न नहीं कर सकते और न ही उन से उन की वाणी की सुन्दरता और उन के व्यक्तित्व का प्रभाव ही व्यक्त हो सकता है जो उन की गति विधि में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्याप्त रहते और उन के सम्पर्क में आने वालों को मोहित कर लेते थे। वह सार्वजनिक भाषण देते समय कुर्सी वा ऊंची चौकी पर और निज वार्तालाप के समय अपनी प्रिय चटाई पर बैठा करते थे।

स्वामी जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् और व्याकरण के विशेषज्ञ थे। उन का मस्तिष्क विविध ज्ञान-विज्ञान का भण्डार था। उन के उदाहरण बड़े प्रभावशाली होते थे, जिन का प्रयोग वह बड़ी बुद्धिमत्ता से करते थे और जिन से उन के अपार-ज्ञान-भण्डार का परिचय मिला करता था उन की वाग्मिता प्राचीन आचार्य शैली की थी, परन्तु भाषण शैली इतनी आकर्षक होती थी कि सहस्रों श्रोता मन्त्र मुग्ध रहते थे और उन के सिद्धान्तों की ओर सहज ही आकृष्ट हो जाते थे।

उन के भाष्य के सम्बन्ध में जिसे वह ठीक मानते थे विवाद उठा और वह अभी तक समाप्त नहीं हुआ है। उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की।

"मैं बड़े भक्ति- भाव से उन के अज्ञात चरणों में अपनी विनीत श्रद्धाञ्जलि अर्पण करता हूँ।"

निर्बलों के साथी

महर्षि की जन्मभूमि टङ्कारा में सन् १९२६, मास फरवरी ता० ११ वृहस्पतिवार को बयानन्द शताब्दी महोत्सव' के पांचवे दिन, उपस्थित जनता के सामने १०३ वर्षीय एक वृद्ध मुसलमान इब्राहीम ने जो महर्षिजी के बाल-सखा थे, उन्होंने अपने बाल्यकाल की घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा:—

"जिन्हें आप लोग ऋषि दयानन्द कहते हैं तथा आज समग्र भारतवर्ष ही नहीं,प्रत्युत सारा संसार जिनकी विद्वत्ता और महत्ता पर मुग्ध है, उन भगवान् के साथ मैं इसी टङ्कारा गांव की भूमि में इसी गेमी नदी के रेतीले मैदानों पर इन्हीं खेतों के अन्दर, इन्हीं वनमालाओं में कई साल तक बचपन में खेलता रहा हूँ। मुझे आज भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनकी वह बचपन की मुग्ध सूरत स्मरण है। उनकी आंखों में मुग्धता और तेज, उनके शरीर में सौन्दर्य और बल, उनके चेहरे पर सरलता और आग्रह उनकी वाणी में मृदुता और ओज कूट-कूट कर भरा हुआ था। कितनी ही बार इसी स्थान पर जहां आज यह पंडाल सुशोभित है, मैंने उनके साथ बाल्य क्रीड़ायें की थीं। कितनी ही बार उनके उस बाल्य शरीर के साथ मैंने कुश्ती और मार-पीट की है। यद्यपि मूल-शंकर आयु में मुझसे दो साल छोटे थे तथापि उनके गौर-शरीर में बड़ा बल था। वे अकेले ही मुझे और मेरे साथियों को बाल्य संग्राम में पराजित कर दिया करते थे। सच पूछिये तो मूलजी बड़े उपद्रवी और हठी थे, परन्तु निर्बलों के साथ उनकी बड़ी सहानुभूति रहती थी। उनके पिताजी का नाम कर्सनजी त्रिवेदी था। करीब २३ साल की उम्र में हमने सुना था कि वह अपनी सारी सम्पत्ति को ठुकरा कर घर से भाग गया है और कहीं जाकर संन्यासी हो गया है। उनके पिताजी ने उनकी बड़ी खोज की थी। घर छोड़ देने के बाद मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं उनके फिर भी दर्शन करता; परन्तु उसके बाद वे कभी इस ग्राम में लौटे ही नहीं और मेरी वह ख्वाहिश अधूरी ही रह गई।

मैं पं० पोपटलाल के वचन की ताईद करता हूँ और आप को विश्वास दिलाता हूँ कि जिस मकान में इस समय महाशय पोपटलाल जी के भाई प्राणशंकर रहते हैं, वहीं स्वामी दयानन्द का जन्म गृह है। तथा यह मन्दिर है जिसमें दयानन्द के पिता कृष्णजी लम्बी चौड़ी उपासनायें किया करते थे। वे मूलजी को कभी कभी इस मन्दिर में अपने साथ ले जाया करते थे।"

ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो

लोकप्रिय नेता दीवान बहादुर हरबिलास शारदा, महर्षि दयानन्द के समकालीन उन के अनन्य भक्त थे। मृत्यु के समय वे महर्षि के निकट उपस्थित थे। उन्होंने अपने संस्मरण निम्न शब्दों में लिखे हैं—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"स्वामी दयानन्दजी का देहान्त ३० अक्टूबर १८८३ ई० अजमेर में हुआ था। १८८३ के सितम्बर मास में वे महाराजा जोधपुर के अथिति के रूप में जोधपुर गये थे। स्वामीजी महाराज सोने से पूर्व एक कटोरा दूध पिया करते थे। २९ सितम्बर को दूध पीने के पश्चात् उन का जी मचलने लगा। उन्हें विष दिया जा चुका था। उन की अच्छी से अच्छी चिकित्सा कराई गई, परन्तु कोई लाभ न हुआ। उन्हें ठंडे स्थान पर जाने का परामर्श दिया गया और वे १६ अक्टूबर को आबू पर्वत पर लाए गये। वहां भी लाभ न होने पर २७ अक्टूबर के प्रातः ३ बजे वे अजमेर ले जाये गये और 'भिनाय की कोठी में ठहराये गये। जब हम लोगों को इस बात का पता लगा तो मेरे मित्र रामगोपाल और मेरा चचेरा भाई रामविलास दोपहर बाद भिनाय की कोठी पर हाल ज्ञात करने के लिये गये। हम तीनों सहपाठी थे और गवर्नमेंट कालेज अजमेर में मैट्रिक क्लास में पढ़ते थे। उस समय मेरी आयु लगभग १६ वर्ष की, रामविलास की १८ वर्ष की थी। कि स्वामीजी के स्वस्थ होने पर हम उन के व्याख्यान सुनें। उन दिनों अ मेर में पजाब के एक सरकारी डाक्टर थे, जिन का नाम लक्ष्मणदास था उन्होंने स्वामीजी की बड़ी मनोयोग से चिकित्सा की परन्तु अवस्था में सुधार न हुआ। २९ अक्टूबर को स्वामीजी महाराज बहुत दुर्बल हो गये थे और आराम होने की आशा जाती रही थी। दूसरे दिन दीवाली का पर्व था। इस दिन भी हम स्वामीजी को देखने गये। हमने देखा कि सर्वत्र उदासी छाई हुई है। जिस समय स्वामीजी ने शरीर छोड़ा था, उस समय हम भिनाय की कोठी में थे। उस समय सायंकाल के ६ बजे थे। यह दृश्य बड़ा भव्य था। स्वामीजी ने स्वामी आत्मानन्दजी और ब्रह्मचारी रामानन्द को बुलाया और उन्हें आशीर्वाद दिया। इसके पश्चात् उन्होंने उपस्थित जनों को अपने पीछे खड़ा होने की आज्ञा दी।

सब को आशीर्वाद देने के पश्चात् उन्होंने बैठ कर गायत्री का पाठ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया, कुछ क्षण ध्यानावस्थित रहे और फिर लेट गये। उन के अन्तिम शब्द थे, दयामय, सर्वशक्तिमान् ईश्वर तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, अहा ! तूने अच्छी लीला की।"

यह कह कर उन्होंने करवट बदली, लम्बा श्वास खींचा और बाहर निकाला। यही उन का अन्तिम श्वास था।

हम तीनों रोते हुए घर लौटे। दिवाली के पुण्य अवसर पर हमें रोता देख कर पिताजी को आश्चर्य हुआ। उन्होंने रोने का कारण पूछा मैंने सुबकियां भरते हुए कहा-- "भारत का सूर्य छिप गया है।" मेरे पिताजी को समझते देर न लगी। उन्होंने हमें दिलासा दिया।

दूसरे दिन स्वामी का शव जलाया गया। प्रातः ९ और १० बजे के मध्य उन के मृत देह को विमान जलूस के रूप में श्मशान भूमि में ले जाया गया। आगरा दरवाजा में प्रविष्ट होकर जलूस नयाबाजार, कड़क्का चौक, धान मण्डी, दरगाह बाजार, घसेटी, डिग्गी में से गुजरता हुआ, उसरी दरवाजा में जाकर निकला और मलूसर को श्मशान भूमि की ओर बढ़ा। स्वीकार पत्र में निर्दिष्ट निर्देशों के अनुसार शव-दाह हुआ।

मैं प्रारम्भ से ही जलूस के साथ था। अन्य आर्य भाइयों के साथ, अरथी को कन्धा लगाने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह अरथी बहुत बड़ी थी और १६ व्यक्ति उसे लिए हुए थे। एक बार अजमेर नगर में एक व्याख्यान में उन्होंने बाल-विवाह की दुष्प्रथा का प्रबल खण्डन और ब्रह्मचर्य का मण्डन किया था। उन्होंने कहा था कि जो वृह्मचर्य धारण नहीं करते और बाल विवाह के शिकार होते हैं वे दुर्बलकाय होते हैं। अपने सम्बन्ध में बोलते हुए उन्होंने कहा था कि "मैंने अपने जीवन में पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया है और मेरे शव को उठाने में १६ आदमी लगेंगे।" मुझे यह बात सहसा याद आ गई राय बहादुर पं० भामराम ने जो उस समय अजमेर में जुडीशियल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहायक कमिश्नर थे और स्वामी जी के परम भक्त एवं समर्थक थे, शव यात्रा का प्रबन्ध किया था। वे प्रारम्भ से लेकर अन्त तक पैदल साथ रहे। शव-दाह प्रक्रिया के पूर्व उन्होंने एक संक्षिप्त भाषण में मानव जाति के प्रति की गई स्वामीजी की सेवाओं का वर्णन किया और उपस्थित समुदाय को प्रेरणा दी कि "स्वामीजी ने संसार के हित के लिये जो कार्य आरम्भ किया था—उसे जारी रखें।'

महर्षि जीवन विषयक कुछ विशेष तिथियां

१ जन्म:—टंकारा (गुजरात) सम्वत् १८८१ वि० (सन् १८२४ ई०)

२ मूर्तिपूजा के प्रति अश्रद्धा:—टंकारा शिवालय (शिवरात्रि) सम्वत् १८९४ वि०।

३ अनुजा की मृत्यु:—सम्वत् १८९६ वि०।

४ गृह त्याग—सम्वत् १९०३ वि०।

५ दयानन्द सरस्वती नाम:—नर्बदा तट चाण्दोद कर्णाली सम्वत् १९०३ वि०।

६ गुरु विरजानन्द से भेंट:—मथुरा में-सम्वत् १९१७ वि०

७ कार्य क्षेत्र में प्रवेश:—सम्वत् १९२० वि०।

८ पाखण्ड खंडनीपताका:—कुम्भ मेला हरिद्वार, सम्वत् १९२३ वि०।

९ काशी में शास्त्रार्थ:—विशुद्धानन्द तथा बाल शास्त्री से सम्वत् १९२६ वि०।

१० कलकत्ता में:—केशवचन्द्र सेन आदि से भेंट सम्वत् १९२९ वि०।

११ प्रथम हिन्दी में भाषण-वाराणसी में सम्वत् १९३१ वि० के ज्येष्ठ में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२ प्रथम आर्यसमाज की स्थापना:— बम्बई में चैत्र शुक्ल १ सं० १९३२ वि०।

१३ आर्यसमाज के दस नियम:—लाहोर में सं० १९३४ वि० ज्येष्ठ (अधिक) शुक्ल १३ को बनाये।

१४ ऋग्वेद भाष्य: —सं० १९६४ में शुरू किया।

१५ ऋग्वेद व यजुर्वेद भाष्य मुद्रण:—सं० १९३५ वि० में शुरू हुआ।

१६ वैदिक यन्त्रालय की स्थापना:—सर्व प्रथम वाराणसी में माघ शुक्ल २ वृहस्पतिवार सं० १९३६ वि० को। बाद में सन् १८८१ ई० में प्रयाग और सन् १८९१ ई० में अजमेर लाया गया।

१७ भ्रमोच्छेदन की रचना:—ज्येष्ठ कृष्ण २ गुरुवार सं० १९३७ वि०।

१८ सत्यार्थप्रकाशन:— प्रथम संस्करण सं० १९३२ वि० वर्तमान संशोधित 'सत्यार्थप्रकाश' तैयार हुआ सं० १९३९ वि० प्रकाशन सं० १९४१ वि०।

१९ परोपकारणी सभा की स्थापना:—फागुन कृष्ण ५ मंगलवार सं १९३९ वि०। इसी अवसर पर स्वीकार पत्र लिखा गया।

२० संस्कार संशोधित:—सम्वत् १९४० वि०।

२१ निर्वाण:—कार्तिक अमावस्या (दीपावली) को सायंकाल ६ के लगभग अजमेर में-सं० १९४० वि० ३० अक्टूबर १८८३ ई०)

महर्षि दयानन्द के योग साधन के स्थान

१—शैला नगरी,	२—कोट गांगड़,
३—सिद्धपुर,	४—चेचन मठ (बड़ोदा)
५—चांणोद कर्णाली,	६—व्याम आश्रम
७—छिनूर (सिनोर)	८—दुग्धेश्वर मन्दिर (अहमदाबाद)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

९—आबू पर्वत, १०—अर्बुदा मवानी गिरि शृङ्ग,
११—उत्तरा खण्ड, १२—हिमालय,
१३—हरिद्वार, १४—चण्डी का जंगल,
१५—ऋषिकेश, १६—टिहरी-श्रीनगर,
१७—देव प्रयाग, १८—रुद्र प्रयाग,
१९—केदार घाट, २०—तुङ्गनाथ,
२१=तुङ्गनाथ, २२—ज्योतिर्मठ,
२३—अलखनन्दा, २४—वसुधारा,
२५—गौरी कुण्ड, २६—भीम गुफा,
२७—केदार नाथ, २८—त्रिगुणी नारायण,
२९—बद्री नारायण, ३०—सत्पथ,
३१—नर्मदा नदी का स्रोत, ३२—गङ्गोत्री,
३३—उत्तर काशी, ३४—गंगापार चील के जंगल का जल प्रपात
३५—धराली की गुफा, ३६—भटवाड़ी का ऊँचा जंगल,
३७—मल्ला चट्टी का मार्ग, ३८—बूढ़े केदार आदि

महर्षि दयनन्द के विद्या गुरु

१—पिता, २—पितृव्य,
३—कृष्ण शास्त्री-नर्मदा, ४—रामनिरञ्जन शास्त्री-काशी,
५—परमानन्द, ६—पूर्णानन्द सरस्वती, संन्यास तथा विद्या गुरु,
७—स्वामी विरजानन्द दण्डी-दृष्टि देने वाले अमरगुरु मथुरा।

महर्षि दयानन्द के योग—गुरु

१—योगानन्द, २—ज्वालानन्द गिरी,
३—शिवानन्द गिरी, ४—भवानी गिरी-आदि।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थ

१—ऋग्वेद भाष्यः—

ऋषि ने इस भाष्य को प्राचीन आर्य शैली के अनुसार किया है। जिसमें निखण्टु, निरुक्त, अष्टाध्यायी आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ऋग्वेद के सत्य अर्थ को बड़ी उत्तमता से प्रकट किया गया है। यह भाष्य, संस्कृत तथा आर्य भाषा (हिन्दी) दोनों में है।

२—यजुर्वेद भाष्यः—

यह भाष्य भी महर्षि ने आर्ष-शैली के अनुसार संस्कृत तथा आर्य भाषा (हिन्दी) दोनों में करके वास्तविकता को दर्शाया है।

३—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकाः—

यह ऋग्वेदादि भाष्यों की भूमिका है। इसमें वेद प्रतिपाद्य ६० विषयों को मार्मिक ढङ्ग से उपस्थित किया है। यह ग्रन्थ भी संस्कृत तथा आर्य भाषा दोनों में है।

४ सत्यार्थप्रकाशः—

यह ऋषि का सब से प्रसिद्ध अमर ग्रन्थ में १४ समुल्लास हैं। जिनमें वैदिक धर्म तथा अन्य मतमतान्तरों के स्वरूप को युक्ति तथा प्रमाणों से बड़ी सुन्दरता से दर्शाया गया।

५—संस्कारविधिः—

इसमें ऋषि ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कारों के करने की विधि तथा उनके उद्देश्य बताए हैं।

६—पचहायज्ञविधिः—

इसमें ऋषि ने गृहस्थी के प्रतिदिन करने योग्य ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, देवयज्ञ, अतिथियज्ञ, पितृयज्ञ तथ बलिवैश्व देव यज्ञ के करने की विधि बताई।

७—आर्याभिविनयः—

यह आर्यों का भक्ति-स्तोत्र है। इसमें ऋषि ने एक सौ मंत्रों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

की सुन्दर व्याख्या की है। जिसको प्रभु प्रेम-रस पूर्ण प्रार्थना पुस्तक कहा जा सकता है।

८ भ्रांति निवारण—

इसमें पौराणिक मत के सब वेद भाष्य कर्ताओं का खण्डन किया गया है।

९—भ्रमोच्छेदन—

इसमें महर्षि ने पौराणिक सिद्धान्त का खण्डन किया है।

१०—स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः—

इसमें ऋषि के मन्तव्य दिये हैं।

११—वेद विरुद्ध मत खण्डनः—

इसमें मूर्तिपूजा आदि साम्प्रदायिक बातों का खण्डन किया है।

१२—काशी शास्त्रार्थः—

इसमें ऋषि का पौराणिक पण्डितों से किये गये शास्त्रार्थ का वर्णन है।

१३—शिक्षा-पत्री ध्वान्त निवारणः—

इसमें स्वामीनारायण मत की प्रश्नोत्तर द्वारा समीक्षा की गई है।

१४—व्यवहार भानु—

शिक्षाप्रद दृष्टान्तों का संग्रह।

१५—गो करुणा-निधिः—

गौ-रक्षा और मांस-भक्षण के विरुद्ध सुन्दर पुस्तक है।

१६—आर्योद्देश्य-रत्न-मालाः—

आर्यों के मुख्य १०० सिद्धान्तों का संग्रह।

१७—सद् धर्म विचारः—

चांदपुर मेले में यवनों तथा ईसाइयों से शास्त्रार्थ।

१८—वेदांग प्रकाशः—

यह व्याकरण के १४ भाग हैं। संस्कृत सीखने के लिये अद्भत पुस्तक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९-- संस्कृत वाच्य प्रबोधः—

संस्कृत सीखने की उत्तम पुस्तक सीखने की उत्तम पुस्तक।

२०—फिरोजाबा शास्त्रार्थः—

जैनियों से शास्त्रार्थ का वर्णन।

२१—अष्टाध्यायी भाष्यः—

व्याकरण के प्रमुख ग्रन्थ अष्टाध्यायी का सरल सुन्दर भाष्य।

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज आर्यसमाज का संक्षिप्त परिचय

१–हिन्दुस्तान में लगभग ४५०० आर्यसमाजें हैं।

२–इंगलैंड, जर्मनी, आसरिया, अफगानिस्तान, अरबस्तान, अमरीका, पर्शिया, बगदाद, डचगाइना, सिंगापुर, सियाम, अनाम कम्बोडिया मलेश्या, होगकोंग आदि देशों में आर्यसमाज का कार्य चलता है।

३–पूर्व अफ्रिका, दक्षिण अफ्रिका, मोरीशियस, फिजी, इग्लैंड आदि देशों में लगभग ६०० समाज मन्दिर है।

४—प्रान्तीय तथा जिला आर्य प्रतिदिन सभाओ तथा उप सभाओं की संख्या लगभग २०० दो सौ है।

५—भारत, नेपाल, अफ्रिका, फिजी, ट्रीनीदाद में आर्य वीरदल की ८०० शाखाएँ हैं। जिसमें लाखों नवयुवक शिक्षण ले रहे हैं।

६—भारत में लगभग ३०० आर्य कुमार सभाएँ हैं।

८—आर्यसमाज द्वारा लगभग ३२५ कालेज तथा हाई स्कूल चलाए जाते हैं।

८—आर्यसमाज की ओर से लगभग ८० गुरुकुल तथा संस्कृत पाठशालाएँ चलाई जाती हैं।

९—प्राथमिक तथा माध्यमिक पाठशालाओं की संख्या लगभग चार है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१०—अछूतों के उद्धार के लिए आर्यसमाज द्वारा चार हजार पाठशालाएं चलाई जा रही हैं।

११—कानपुर में एक भव्य दयानन्द एंजीनियरिंग कालेज चलता है।

१२—लगभग दो हजार संन्यासी, पण्डित, भजनीक आर्यसमाज का प्रचार करते हैं।

१३—५०० व्यायाम शालाएं तथा अतिथि गृह चलाए जाते हैं।

१४—एक हजार पुस्तकालय, वाचनालय, चलाए जाते हैं।

१५—१२५ प्रेसों द्वारा मासिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, पत्र पत्रिकाएँ निकाली जाती हैं।

१६—परोपकारणी सभा, विरजानन्द वैदिक संस्थान, रामलाल कपूर ट्रस्ट, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, वानप्रस्थाश्रम, दयानन्द मठ, श्रद्धानन्द स्मारक ट्रस्ट, साल्वेशन मिशन, विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्था, आर्य युवक प्रेमी संघ दिल्ली, गुलराज गुप्त चेरीटी ट्रस्ट, दयानन्द रक्षा मण्डल लखनऊ, आर्यसार्वदेशिक प्रकाशन लिमिटेड, आदि प्रकाशन संस्थाएं हैं।

महर्षि दयानन्द वचनामृत

मेरी अस्थियां किसी एक स्थान में मत गाड़ना। अपितु किसी खेत में जाकर बखेर देना। कहीं मेरे पीछे भी मेरे भक्त-जन मुझे अवतार या पैगम्बर मानकर मेरी पूजा अर्चा करने न लग जाएं।

शरीर की पुष्टि तथा आत्मा और अन्तःकरण की शुद्धि प्रभु-प्राप्ति का साधन है।

परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए यदि अज्ञानी-जन मेरे जीते-जी मेरी अंगुलियों को काट कर बत्ती का भी काम क्यों न लें; किन्तु दयानन्द प्रभु-आज्ञा का परित्याग कभी न करेगा।

उस जगदीश्वर की आज्ञा है कि मैं सन्मार्ग-च्युत जीवों को कल्याण का मार्ग दिखाऊँ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब शय्याशायी होने लगो, तो प्राण व पवित्र (ओ३म्) का जप किया करो, जब तक नींद न आए, पाठ करते रहो। यहाँ तक कि उसी नाम स्मरण में सो जाओ। इससे उत्तमोत्तम लाभ होते हैं, वासनामय देह बदल जाता है।

धर्म, कर्म और आत्मा-परमात्मा से भिन्न वस्तुओं में आनन्द समझना, अविद्या का एक लक्षण है।

बलदेव ! मेरे अपमान पर कोप मत करो ये तो हमारे भाई हैं। इन्हीं की कल्याण-कामना करते ही रात-दिन बीतते हैं। मेरे मान-अपमान पर ध्यान न दो 'धर्मोपदेशक' को तो भूमि के समान सहनशील होना चाहिये।

हे मनुष्यो ! जो जगदीश्वर सारे संसार में व्यापक होकर सबको धारण करके रक्षा करता हुआ अन्तर्यामी रूप से सर्वत्र व्याप्त हो रहा है जिसकी कृपा से विज्ञान दीर्घायु तथा विजय प्राप्त होता है, तुम उसी का ही निरन्तर भजन करो।

मुझे अपनी मुक्ति की कुछ भी चिन्ता नहीं, दारुण दुःखों के त्रास से दीन दशा से दुर्बल अवस्था से परम-पिता के पुत्रों को मुक्ति दिलाते हुए मैं स्वयम् ही मुक्त हो जाऊँगा।

राजन् ! मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँ या परमेश्वर की ? मैं चाहूं तो आपके राज्य की सीमा से एक दौड़ में पार हो सकता हूं। किन्तु भगवान् की आज्ञा का उल्लंघन करके उसके विशाल राज्य से कैसे पार हो सकूंगा ?

विश्व की विचित्र रचना ही, उस विश्व के रचयिता को सिद्ध कर रही है।

परोपकार और परहित करते समय अपना मानापमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है।

यदि मेरी भी कोई बात तुम्हें असत्य तथा वेद विरुद्ध प्रतीत हो तो उसे भी मत मानना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परमेश्वर की उपासना अर्थात् योग-वृत्ति ही सब क्लेशों का नाश करने वाली और सुख शान्ति आदि गुणों को प्रदान करने वाली है।

जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आप को अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसे दूसरा नहीं हो सकता।

सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् सार्वजनिक धर्म जिसको सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी इसलिये उसको सनातन नित्य धर्म कहते हैं कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।

जो-जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध हैं उनका त्याग कर बर्ते वर्तावे तो जगत् का पूर्ण हित हो।

जिस प्रकार आरोग्य विद्या और बल प्राप्त हो उसी प्रकार भोजन छादन और व्यवहार करे करावे अर्थात् जितनी क्षुधा हो उससे कुछ न्यून भोजन करें। मद्य मांसदि के सेवन से अलग रहें।

जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य्य रहता है, तब उसको आरोग्य बुद्धि, बल पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

जैसी हानि प्रतिज्ञा को मिथ्या करने वाले की होती है वैसी अन्य किसी की नहीं, इसलिये जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा करनी उसके साथ वैसी ही पूरी करनी चाहिये।

बल और बुद्धि का नाशक जैसा व्यभिचार और अतिविषयासक्ति है, वैसा और कोई नहीं।

जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे।

एक गाय की एक पीढ़ी में ४ लाख ७५ हजार छः सौ मनुष्यों का पालन होता है।

जब से गौ आदि पशुओं को मारने वाले विदेशी इस देश में आकर राज्याधिकारी हुए हैं, तब से क्रमशः दुःखों की बढ़ती होती जाती है।

जिनके मरे पर चमड़ा भी कण्टक आदि से रक्षा करे उनके गले छुरों से काटकर जो अपना पेट भरते हैं, उनसे अधिक विश्वासघाती अनुपकारी दुःख देने वाले और पापी जन कोई नहीं।

गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा दोनों का नाश हो जाता है।

राजा प्रजा से कर लेता है कि गाय आदि की यथावत् रक्षा करे।

सब के साथ प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्ताव करो।

अपना राज्य विदेशी राज्य से हर अवस्था में अच्छा है।

'हिन्दी (भाषा) के द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

अत्याचार करने वाले से, अत्याचार सहने वाला अधिक पापी है।

देखों, परमात्मा का स्वभाव कि जिसने सब विश्व और सब पदार्थ परोपकार ही के लिये रच रक्खे हैं, वैसे तुम भी अपना तन, मन, धन परोपकार ही के अर्पण करो।

नैतिक, सामाजिक, एवं मानसिक दासता से मुक्त हो।

प्रकृति पूजा छोड़कर, ब्रह्म के उपासक बनो।

ईश्वरीय ज्ञान वेद के पावन आलोक में स्वयम् को समझो।

मतान्धता एवं अन्धविश्वासों से मानव जाति का त्राण हो।

वेदों का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब श्रेष्ठ पुरुषों का परम धर्म है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभु के अटल विश्वासी ही को सब इष्ट सुखों की प्राप्ति होती है।

दुष्ट व्यसनों में फंसने से मर जाना अच्छा है।

द्वेषी का द्वेष उससे द्वेष करने से दूर नहीं होता।

मनुष्य जीवन में कुछ भी दुर्लभ नहीं।

जब तुम छल से मनुष्यों को ठग कर उनकी हानि करते हो तो परमेश्वर के सामने क्या उत्तर दोगे ?

जो मनुष्य प्रातःकाल परमेश्वर की उपासना, अग्निहोत्र, ऐश्वर्य, उन्नति, प्राण और अपान की पुष्टि, आचार्य, उपदेशक और विद्वानों का सत्संग, उत्तम औषधि का सेवन और अपने आत्म स्वरूप को जानने और प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं वे जन सब सुखों से सुशोभित होते हैं।

यथार्थ शुद्ध भाव, सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना, मन को अधर्म में न जाने देना, इन्द्रियों को पापाचरणों से रोकना अर्थात् शरीर, इन्द्रिय और मन से सदा शुभ कर्मों का आचरण करना, वेदादि सत्य विद्याओं का पढ़ना-पढ़ाना, वेदानुकूल आचरण करना आदि उत्तम धर्म युक्त कर्मों का नाम ही तप है।

जो राज पुरुष भयानक गौ हत्या करने वालों को मारते हैं और उत्तमों की रक्षा करते हैं, वो निर्भय होते हैं।

सज्जनों का धन औरों के सुख के लिए, और दुष्टों का धन औरों के दुःख के लिए होता है।

ईश्वर पुरुषार्थी मनुष्य पर कृपा करता है, आलस्य करने वाले मनुष्य पर नहीं।

नमक पर कर नहीं लगना चाहिये। नोन, हरघास, जलाने की लकड़ी पर जो कर लिया जाता है, वह मुझको अच्छा नहीं मालूम होता। नोन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं होता। जो मजदूरी [illegible]त से जैसे-तैसे अपना निर्वाह करते हैं, उन दरिद्रों को इससे क्लेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहुँचता है। मद्य, अफीम, गांजा, भंग ऊपर चौगुना कर स्थापन किया जाय नशा से किसी का कुछ भी उपकार नहीं होता।

परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देखने को मिले कि वेद भाष्य संपूर्ण हो जावे, तो निस्सन्देह इस आर्यवर्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जावेगा।

वेद, जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त ऋक संहितादि चार पुस्तक हैं, जिन से मनुष्यों को सत्यासत्य का ज्ञान होता है, उनको वेद कहते हैं—जैसे ऋग्वेद। यजुर्वेद। सामवेद। अथर्ववेद।

जो मनुष्य ब्रह्मचर्य को प्राप्त होकर फिर उसका लोप नहीं करते वे सब प्रकार के रोगों से रहित धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

धर्मात्मा और उपकारी जनों को संसार में भय नहीं होता।

भारत की उन्नति का उपाय एक धर्म, एक भाषा, और एक लक्ष्य की प्राप्ति ही भारत की पूर्णोन्नति में साधक है। कड़े और खरे उपदेशों से जाति को जगाकर कुरीतियों और कुनीतियों को नष्ट करना ही मेरे खण्डन का एक मात्र उद्देश्य है। इसलिए मैं जाति के हित के लिए अनेक प्रकार के कष्ट, गालियां और विषपान आदि भी सह लेता हूं।

सच्चा प्रभु का प्रेमी किसी से घृणा नहीं करता। वह ऊँच नीच भेद भावना को त्याग देता है। वह उतने ही पुरुषार्थ से दूसरों के दुःख निवारण करता है, जितने पुरुषार्थ से वह अपने कार्य करता है। ऐसे ज्ञानी जन ही वास्तव में आत्म प्रेमी कहलाते हैं।

एक मैं चेतन आत्मा हूँ, एक ही सर्व शक्तिमान् परमात्मा है, और एक ही पवित्र वैदिक धर्म, दूसरा है कौन ? जिससे डरें ?

जैसे समाधिस्थ योगीजन प्रभु ध्यान में मग्न हो जाते हैं, वैसे ही कम से कम एक घण्टा सब मनुष्यों को प्रभु की उपासना में मग्न हो जाना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Del

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाणी मात्र को प्रभु का प्रिय पुत्र समझ कर उनसे सदा प्रेम करना। किसी से भी घृणा का व्यवहार न करना और उनके कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहना, यहां तक कि उनकी हित साधना में अपने जीवन तक को भी अर्पित कर देना।

मुझे हर्ष है कि लोग ईश्वर भक्ति के प्रचार के कारण मुझे गालियां देते हैं। भगवद्भक्त को चाहिये कि वह अपनी आत्मा को भगवान् की ही आज्ञा में अर्पण कर दे।

भारत की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसकी आध्यात्मिक निधि है। अतः सब कुछ खोकर भी उसकी रक्षा अनिवार्य है।

जिस करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिये संस्कारों को करना सब मनुष्यों को अति उचित है।

विदेशियों के आर्यवर्त्त में राज्य होने का कारण आपस की फूट, मतभेद ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना-पढ़ाना व बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि, कुलक्षण, वेद विद्या का अप्रचार आदि कुकर्म हैं। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

आजकल की छूत-छात मूर्खों का बहकावा और अज्ञान है।

चारों वेदों में ऐसा कहीं नहीं लिखा जिससे अनेक ईश्वर सिद्ध हो।

'यज्ञ' उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य शिल्प अर्थात् रसायन जो कि पदार्थ विद्या उससे उपयोग और विद्यादि शुभ गुणों का दान अग्निहोत्रादि जिनसे वायु, वृष्टि-जल, औषधि की पवित्रता करके सब जीवों को सुख पहुंचाना है।

अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम, तम्बाकू आदि जो-जो बुद्धि को नाश करने वाले पदार्थ हैं, उनका सेवन कभी न करें।

हो[illegible]े परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह [illegible]त से जैसा [illegible]र्ख भी होता है क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

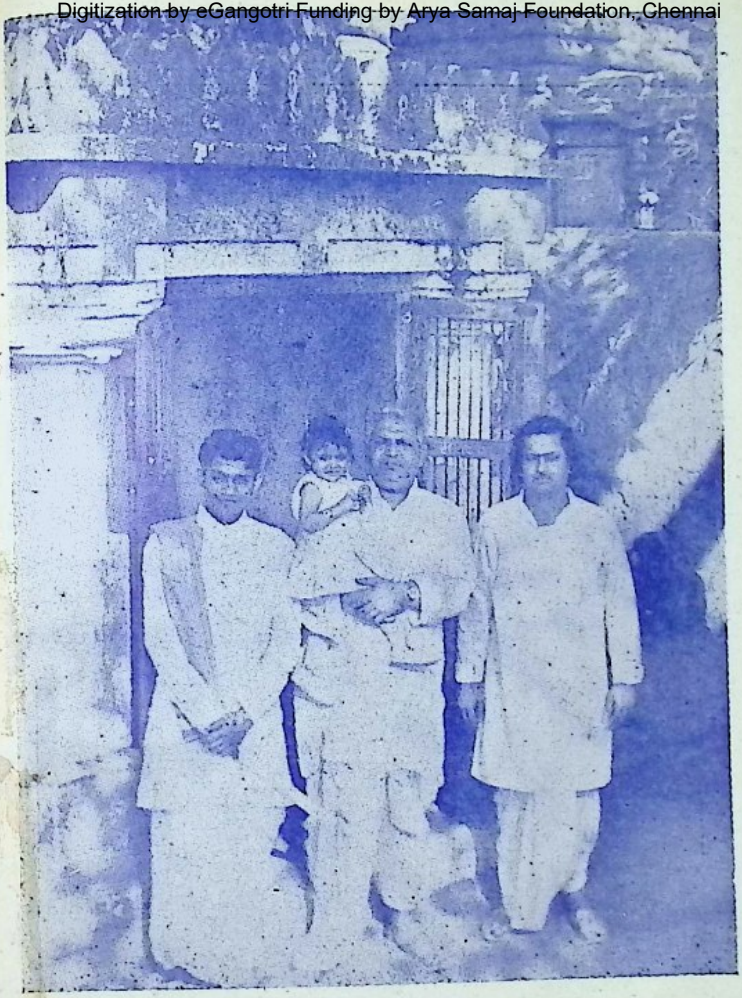

वह बोध मंदिर जहां शिवरात्रि को बालक मूलशंकर का बोध हुआ था। 'जन-ज्ञान' के संपादक, सचालक और श्री रामनारायण शास्त्री मंदिर के प्रागण में खड़े हैं।

को बनाया उसे ही भुला देना किसी भी दृष्टि से उचित न
समाज ही संसार को शांति और आनन्द का सच्चा मार्ग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...त से ...दित्य बाल ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi